चंदा हंदी रात

(राजस्थानी कहाणिया)

सूर्यशंकर पारीक

विकास प्रकासन
बीकानेर



राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी,
बीकानेर रै आर्थिक सैयोग सू प्रकाशित

प्रकाशक—विकास प्रकाशन, ८ चौधरी क्वाटर,
स्टेडियम रोड, बीकानेर (राजस्थान)

छापोखानो—प्रदीप प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर

संस्करण पैलो—१९९०

मोल - फकत चालीस रिपिया

Chanda Handi Rale (Storie) S S Pareek Rs -40/

थोडीसी'क वात

"चदा ह्दी रात" मे म्हारी एक दरजण का'ण्या पखडीजी है। श्रा छाडा श्रौर पण का'ण्यां हैं, व श्रागैसाम्भ भळै कणाई पाठका रै सैमू डै करीजली। श्र का'ण्या' किसै श्रलै तलै री हैं इण रो निरवाळ मैं खुदाखुद नी कर'र इण री तात तो खरी मीट श्राळा वै कुताळू हीज करेला अर जणा ही श्रा बात श्रोपती लागली। म्हारै मन मे श्रा वात ठेट सू हीज रैयी है क मैं देख जिसो का'णीकार नी हू, म सू जिसी लिखणी तावै श्राई, लिख गळी है, तोहीपण श्र इतरी फोरी-पतळी नी है। बाचण श्राळै रो टेम श्रव्यरथो पकायत ही नी जावैला। कई न कई पल्लै ही पडैला।

शहरी का'णीकरा रो जिण दिस ध्यान नी गयो है, मैं उण विपयवस्तु नै श्रचेडी है। किस तरै खखेरीजी है, इण रो फसलो पण श्राप माथै होज है।

लखू मानखै रा श्रलेखू रूप हैं, कितासी'क रूप स्यात श्रा का'ण्या मे उकेरीज्या है। तापच्छै हृयोटी-हृयोटी रो फरक हुवै। श्रा मे श्रो फरक विलजरूर लाभेलो।

म्हारो इण बात माय स्यात घणो जोर लाग्यो है कै राजस्थानी भाषा श्रापरै खरै सिणगार मे सज्जै वज्जै। श्रा

लिखार री वडाई नी हुय'र उण रो ओ कतव्य बाध बोल अर जद हीज राजस्थानी भाषा सारू उण रै सही उणियारै मुजब लिखण री खेछळ करीजी है। आज राजस्थानी भाषा वेई इण री घणी चिंत्या है कै वा आपरै मानण जोग रूप मे प्रगट-ओळ पिचोळ रूप मे नी।

आ का प्या मायकर राजस्थानी भाषानै जे चिनसो'क पण लाभ हुयो तो म्हारो लेखण जोग रूप जाणीजैला।

म्हारै इण वात री अणूतो हो पीड़ा है कै प्रस भूता री म्हार प्रफ सशोधन धक देखतारी आरया चु दीजी हैं जिकी पणनी हुवणी चाहिज ही। राजस्थानी रा जाणीकार तो के ठा क निग राख'र पढ लेवैला पण नू वा नायदा सारू ओ फोडो ही है। इण कमीन धकल सस्करण मे सुधारी जावैली। हैण तो मनै माफी ही मागणी पडला। इण पोथी रै छपणै मे राजस्थानी भाषा साहित्य एव सस्कृति अकादमी, बीकानेर सू जिकी वित्ताऊ सहायता मिली है उण रो म्हार घणो गुण किरियावर हैं।

ओ पोथी मैं म्हारै अ गतू बेली सुरगावासी श्री अद्‌भुत शास्त्री नै लख कोडा समरपो है जिका छेल दिना मे राजस्थानी भाषा रा लू ठा समथव बणग्या हा।

राजस्थानी पाठका सू मे ओ भरोसो बाधा'र, चालू वै वै दूणन लाडकोडै धमैजला। वात, इण सू वतो'नी।

विनतगर-

सूर्यशकर पारीक

समर्पण-

आ पोथी–

जिका राजस्थानी पत्रकारिता मे दो पग आधा लता थका राजस्थानी भाषा री 'कुरजा' जेंडी पत्रिका ाढी, राजस्थानीनें वलोवली सवेग धकै टुरण सारू र उणारै बधेपै वेई सम्मेलन तेवडधा अर जिका ाजस्थानीरो भलप मे जिया-मरचा उणी हियैं रै ताल, सुरगावासी श्री अद्भुत शास्त्रीजी री चितार मे णें मान सू समरपू ।

सूर्यशंकर पारीक

बा'ण्या री पडत—

खूटो

"गुवाड रै बीचोबीच, पछै जावक पगार मे किसी री कुजरबो खूटो आखै गाव री आस्था मे रडकै हो। आख मे रेत रो नावसो रावडियो पण रड़कतो दोरो लागै तापछ आेतो खूटो, हौयर रडकै हो। खूबै हो। रडक कोई मामूली नी ही। गाव मे आज किण री मकदूर कै इण खूटन कोई उपाड र अळगो नाखै। इण खूटैन उपाड र नाखणै री उरमा किणी मे हीज नी ही। गाव मे एक हीज इसो आदमी हो जिको जे धार लेवतो तो इण खूटनै उपाड र कडखै बगाय सकै हो पण तिजोरी री बात क वो मुसाफिरी माथ आसाम कानी गयोडो हो। उणनै मुसाफिरी माथै गया न दो बरस हुवणनै लागा है अर आही दो बरसा मे गावर दानै मिनख जिकै रो नाव "डागो" हो, ओ नाव 'यथानाम तथा गुण' आळो हो। डागी रो अथ है जिणरै हाथ मे लोह जडी अर पोला बाधी गगारामी' हुवै का 'मिरजापुरी' हुवै, ओ बेजोगतो अर कालो खूटो गाव री गुवाड मे अध बिचाळै रोप राळयो।

डागो र जद खूडको भैस हो जणा वो उणनै इण खूट सू पेखडतो हो। अबै तो खैर, डागो री भस ही गई गुवाई, माग रै भाडै।

डागी रै देखादेखी गावरै बीजै लोगा पण आप-आप रा खूंटा रोपणा चाया गुवाड मे पण डागी आपरै खूंटै रै बरोबर हीज ना अळगै-आतरै भी किणीनै खूंटा को रोपण दियो नी। जे किणी 'च्यार लाठी चौधरी अर पाच लाठी पच'रवैम मे अठै खूंटो रोपणा तेवडियो तो डागी आपगी डागपटेली रै पाण उणनै आपरो खूडका भस आळो पोठो घालार ग्रैंडो धमकायो कै ता पछै उणरो खूंटा तो रोपणो कडसै रैयो जे कठै हो उणरो डोको पण रोप्योडो हो तो उणनै भी उण उपाड ग्रोळातरै नाख्यो अर भळै खूंटो रोपण री सूस खाली।

पैली कैयोनी कै डागी रै खूंटनै उपाडनै री बात तो आघो रैयो किणी आपरो पण खूंटो गुवाड मे को रोप सक्योनो। डागी री आखै गाव मे दाबो जमग्यो। मिलै जिको ही थरका करतो डागी रै इण काम री सरायना कर अर ग्रैंडो भाव दरसाव कै 'भाईजी, आप ज्यू करा बो साव न्याय वाळो है। ग्रैंडो मूंड मायै बडाया सुणार डागी फुरळोजण न लागग्यो। बो 'चाल ए छाया पडोक नै ग्राऊ'।

गाव मे ग्रैडै सजोरा ग्रादम्यारो ताई कमी नी हा कै डागी रै खूंटैनै उपाड र परिया नी नाख सकै पण आदमी कनै खाली डोल रै हाग सूं ही तो सगळाकामनो नोठै कई तो बीजो जोर पण आदमी कनै हुवणो चाहिजै। कई वारलो तो, कई मायलो जोर। खाली इक्तरफै जार सूं ग्राजरा दुनिया मे काम नी चाल। डोल रो जार

आज घणो मतलब नी राखै। आज जोर रा मायना बदलग्या है। जिको पण जोर किणी कनै 'काट-तोल्योडो' हो नी। अर उण विना नीतो खूटो उपडतो हो अर नी ही आपरो खूटो रुपतो हो।

डागी जिकै दिन ओ खूटो गुवाड मे रोप्यो हो उण दिन आखै गाव मे डागी अर इण खूटै रा भरपूर जिकरो हुयो हो। लोगा इण सारु भोत ही जीभ लपराई अर दाता घिसाई करी ही। लोगी छानै छलकै डागी री निन्दरा माथै उतरी ही। बूढा-बडेरा आपरै माथै नै गोडा विचै देयर अपसोच करै हा पण खुलर सामनै आवणरी हिम्मत किणी मे नी ही घणी के डागी रै खुदाखुद घर मे भी उण दिन तैरासो तळतळीज्यो हो। पण बात घर आळारै पण हाथै आयै को रयी नी। मा-बाप तो बापडा बूढा जरडा हुयर रैग्या हा। मा-बाप री वरजना डागी आपरै लवै ही नी लागणं दो छैकड डागी सागोडो ठरका र गुवाड मे खूटो रोप हीज दियो।

अठीनै गुवाड मे खूटो रोपण सारु सडको उपडती हो अर उठीनै डागी रै आगणे में खाडो पडतो जावै हो।

खूटो रोपण आळी बातनै लेयर आंखो गाव काना बाती करै हो डागीरो बाप पण रोळा करै हो। डागी रो बाप कव हो क "डागी ओ खूटो के रोप्यो है, म्हारो जमारो बिगाडयो है म्हारा धोळा भाडीजणा है मनै तो मानखै मे धूड पडतो लागै है" बाप नी जाणै और काई काई कंवतो हो। डागी री मा च्यार-च्यार चोसरा नासै ही। भरर-भरर रोवै ही। उण री जोडायत तो आप गो

ओढणियो ऊधो माख र ओढ लियो हो । आ वात सैं जाणै क इण तक ओढणियो ओडणा सुहागण भागण सारु वसूण हुवै । पण जिके री उपाय के।

डागी र बाप रै मन मे रैय रयर घिराळा मारता हा क "घर मे जीमण सारु पोतळ सी बाजरी है । समैं सारु घर मे घोळ धार ह बावणनै चावड-धावड मोटो आवडो रो खेत है । बसण ने लू ठो गुवाडो है गुवाडे लारे बाडो है । बाड मे एक नी दस भैस्या पवडी जाय सक, बाडे मे एकनी दस खू टा रोपो, बरजण आळो कुण पछे डागी बेसुरो काम क्यू करै । किणी री आगळी सीध मे क्यू आवै

बाप बोलतो जावै हो ' घर है, घर मे दरगाह सो मोटो दरवाजो है । गुवाडी रै मोजान रो होज मोटो फलसो है जिके न जडया पछे हरे किसना भजो सुई नै सचरणनै जागा नी" । डागी रो बाप आगली-पाछली सोचतो, विचार कर हो क ' आज तो हाथ फोरयो फुरै जिसो सरतर है" ।

बापरो सोचणो हो " डागी गुवाट मे खू टो रोपसी अर घर आळो खू टो एक न एक दिन पकायत ऊमी । कव्रत मे कैयो है क 'बुरो है गाव रो राडो' । आपरो ओ खू टो रोपणो सात्र आच्छो नी पण उपाय के कोई किणरी मानै जदनी" ।

आखै गाव मे खू टै री बात चाल खडी रैयी ही कं आवता-जावतो कोई न कोई इण खू टै मे आमडर पडसी । रात बिरात इण सू टकरा र विणरा न किणोरा दात भागोजसी । अठै खू टा/

रुपएाँ ग्राळी वात वडी मुजरबी है।

डांगो सारू इण नक कँवणो–सुणनो ग्रव्यरथो हो, उणरा मा–वाप तो बूढा जराड हुयग्या है जद ग्रर गाव ग्राळा रो के 'हाथी रै लार इयो ही गडक भूस्या करे'। इया सोचर डांगो किणी नै घेलै सेत पण धारतो नी हो। ग्राखर डांगो खूंटो रोपर हीज रैयो।

एक दिन इणीज रा टाळी जागा पचायत ग्राळो ग्रर रावळियो भैसो ग्रापस मे जुट पडया। पैला तो रावळियै भस हुडो दी जणा पचायत ग्राळो भसो खूंटै मे पेट सुवाणी पडयो जिकै सू उण रो कैई कई भा मे पेट चीरीज्यो पण जद ग्वार ग्वायर पचायत ग्राळो भमो ब्यारू पगा सू ऊभो हुयर दै खूंटै मे इस तक निरातांळ रा खूंट रै माय पडणै सू रावळियै भसे री लारली पासळ्या भाजगी जिकै सू वो जावक वेकामो हुयर रयग्यो। जिया ग्राजादी मिल्या पछै राजावा रा गढ कोट। ग्रातो हुई भसा री बात पण एक दिन बात-पर बात चाल पडी ग्रर दो जणा फोटग्रर स्याबासीरी भारणो भणता ग्रापस मे चुटपडया ग्रर टिप्पा ढिप्पी मे एक जणो खा टिपो -र जा पडयो खूंटै मे जद बापडे रा ग्रागला दात गिटीजग्या। लाग रय-रय करता रैयग्या। जिया जवानी गया पछै मिनख। जा बाद गुवाड मे हथाई–ग्रताई हुवणो ही बन्द हुयगी। लोग ग्रा सोचर गुवाड मे बठणो वद कर दियो कै नी जाणै कुण कणा ग्रापस री खीचाताण मे जा टकरावै खूंटै सू। खूंटै सू टकरावण

रो मतलब है आण्रो नुकसान करणो।

अबै तो खू टो सगळा री आख्या मे हीज नी हिये मे चुवण नै लागग्यो पण बा ही सागण री सागण बात पण कदेन कदे सेर न सवा-सेर मिल ज्याया करै।

सामलै घर रो छोरो, मोटियार जुवान, छाया कान देखर चालै पण साव आळो, जावक जॉडो बिना वाही काढ्योडो। बापरो किसे ढब चालै, इण सूं साव अणजाण। ऊमै काना घर खायोडो जणा पण शरीर सूं सभोरो मल्ल जिसो लाग। डील मे हागो इतरो कै भसे रा सीग उपाड नाखै। बापरा सगळा लछै। इण रो बाप भी नो किणन की नी समझतो हो पण बिरा मिनखा आळ गुणारो गुमानी। सो छोरो एक दिन जा खूटै सू खस्यो। लोगा समझायो कै थारो इण खूटै सू खसणो ठीक नी, थारो बाप अठ हुवतो तो ओ खू टो ही नी रुपतो पण वो आपरै धन्धे सू आसाम गयोडो है जद तू इण सू ना खस। छोरे र ब धी चढगी जणा उण किणी री मानी नी। जा खस्यो डागी रै खूटै सू। खूटो कई दिना पली सू रू योडो हो, उ टै री नीचली गुळी गळगी ही। छोरे र थोडी धधूणी देवणै सू हीज खू टोजी जाय पडयो आग्यो।

डागी न जद ठा लाग्यो जणा वो पग जूती घालै जितरी ताळ मे खूट कन आयो अर खू टैन ऊपडयो देख र घणो फू फायो अर बेगार-बेकार कयो कै जिका म्हारै खूटै सू खस्यो है अर ऊपाडर अळगो नाख्यो हैं उण न चापर ही ठा पडसी कै खू टो ऊपाडया के

हवाल हुया करै। म्हारै खूटैन उपाडणियै काळनाग नै धूळियो वायो है।

दूजै दिन छोरै रो मा आपरै पळींडै मे पाणी पीवण नै गई तो एक जणै ओटळतो भीतलो ऊपराकर कैयो–"ल्यो थारी चिट्ठी'

चिट्ठी (मरयोडै री गावा मे चिठ्ठो बाजै) रो नाव सुणता हीं छोरै री मा माथै जाण बजराक पडयो हुवै। वा हाकी-दाकी रैयगी काई गजब हुवण रै अ देसै सू वा "चिट्ठी-चिट्ठी" करती रैयगी। चिट्ठी लावणियो चिट्ठी भला र वो जाहै-वो।

छोरै री मा हिम्मत बाध र एक पढसरी कनै गई। चिट्ठी मे समाचार उघडया कै "छोर रो बाप दिन तीन पैली समाइजग्यो है' छोर बारै माथ आपरै मू डै री राख झाडण सारु खरच लेवडियो। पचा रै दूहै मुजब वास पळियै रो मूडो अठावण सारु चावलियै रा दाणा राध्या। वास पळियो अर आयोडा भाई गनायत जीमण न ढूक्या, इतरै मे उगूणो दिशा सू खेह उपडती निजरा चढी। लोगा रा मु डा काळा पडग्या क्यू कै उण दिना मरयोडै रो खरच करणो सान वद हो।

थाणेदार छोरै सामे वैत ताणतै पूछ्या - "साची साची वता लाडू कठै लकोर राख्या है?"

छोरो विरगरावना बोल्या "वाप री सूस मे तो आ चावला छाडा की नी वपरायो है। आपनै जिकै लाडू बणावण री शिका–यत करा है नो वा साव कूडो है। अै चावळ ही मैं नेम परवारकर नी राध्या है। वासर टावरा अर भाई गनायतन जीमा र रीतरो रायता करयो है।"

थाणैदार सगीन तपतीस करण सारू पचान अर छोरै मचकाव हं
इतरै मैं अचाचूक रो आर छोर र बाप थाणैदार जीन ज रामजं
री करी अर सगळो भेद खोलर बतायो। छोरै रो बाप पैलाथकं
सरपच रैयोडो हो अर थाणैदारजी सू आपसो मुनाकात हो
'अबै तो थारा वाजै कै म्हारा'। थाणैदार री आहो वत डागी रै
माथ उवकीज ही। डागी रो सगळो पलमो चौड आयग्यो हो
कानून री लह पडती धारा मे डागी रै हाथो मे बडै राज रो गणं
परयोडो हो। वो ऊठ रै लारै नाशै हो। अजे थाणो रो हड मुकाम
कोस तीन आघो हो।

छोग रै मू डै री राख तो के ठा क बाप आसाम सू आयग
धो नान्वी पण डागी र मू डै माथै जिको काळू स थेथडिज्या वो
नी जाणै किता वाडा लेडा खायग्यो। लोग एक दिन खू ट री
चर्चा करी ही व ही आज डागी र घर रो तलपट बाचै हा।

काल री रात अर आज रो दिन डागी रो खू टो उपडयो जको
तो ऊपडयो हो पण आज आख गुवाड मे नू वा नूवा खू टा रुपग्या
हा अर लोग आप आपरै खू ट रै पाण नाचै हा। जद ही कैयो है
टोगडियो खू ट रै पाण नाचै।

निमधो सुभाव

छोटूलाल जद कदेई आपर गाव सू सहर आवतो तो वो सीधो म्हारै घरै आय जावतो । आ सगळा जाणै के सहर मे बात-बात रो पइसो लागै । मकान लेवै तो मकान रो भाडो लागै । छोटी मोटी कोटडती लेव तो उणरै डोळ सारु भाडो लागै । जे कोटडी रै जडन सारु ताळो लेवै तो उणरो भी भाडो लागै । रात नै सोवण सारु माचो लेव तो माचै रो भाडो लागै लागो लूगो, पण जे साल छै महीना मे कदेई-सी काम पड तो के ठा छोटूलाल जैडो मिनख भी भाडो तोडो भोग लेव, पण महीनै मे दो दो, तीन-तीन सू घणी हेला जद रैवणो पडै जणा पण भाडो भोगणै सू तालर सो कूटीज जावै ।

आ ही क्यू, होटल मे चाय पीवै अर जै बासै मे रोटी जीम तो उणरा सैंत-सा पइसा लागै, अै पइसा लागै जिका तो लागै ही इण रै परवारकर निरी जिन्सा रा दाम लागै । सहर मे कुण किणरो सोरी-भीरी कुण-किणी रै बदलै फोडो भोगै । सहर मे तो बन-बनरो काठ भेळो हुयोडो है । सहर रा गाव आळनै भोदू समझै अर गाव आळा सहर आळानै काचा । मतलब ओ कै सहर आळा दिखणादा तो गाव आळा उतरादा । छठ अमावस रो मेळ हुवै तो गाव-सहर आळा रो मेल ।

पण उपाय वे । छोटूलाल सहर रो मडो रसियो क उणन सतवाडिय सहर मे आवणो ही ज पड । मुआव पडियोडा छटणा करै ? छोटूलाल कणई बीमारी रो बोनो लेय र कणाई निस पतर-लेवण न आवणो रो वानो लेय अर कणाई हाकम साहब बुलायो है वानो लेय र सहर आव । पण किणी न किणी वानै सू उणन सैहर री काळी-काळी सडका पर खल्ला घसणा ही ज पडै ।

छोटलाल आपर गाव सू आय र, आपरो काई जरुरी काम सळटाय र सीधो म्हार घरै आय र दो माचा माथ कमर खोल । खाल क्यू कोयनी, सावण न माचो बिछावण नै पथरणो, सिराणियै देवणन गोडवो अर ओढणन दूध सी धोली चादर मिल ज्याव । चौमासो हुवै तो माछरदानी तकायत मिल परी । पीवणन म्हारली धोळी री धार, जीमणन पीतळ सी चदासीरी बाजरी, तीवण अर वो काचरियो दही । एकर तो देखै तो देवतावा री पण मन जीमण सारु ललचावणनै लाग ज्यावै छोटूलाल तो आखर चीज ही ज कोडी'क ? इतरै सू सरै तो ही जाणा, पण धू वो काढणनै उणनै पाच सो पताळीस री बीडिया चाहिजै, सिगरेट पावै जणा म कैवणा ही क काई !

सहर मे निमटण री सगळा सू धणो फोडो, पण म्हार इण मकान मे तळफाड जाजरु अर न्हावण-धोवणनै टकी आळी टू टी जकी बगीडा करती चालै । अडी सगली सुविधावा, भळ बीजो काई चाहिज ।

छोटूलाल कनै सू मैं ग्रोर-ग्रोर बाता री सरावणा कोनी सुणी पण तळफाड जाजरु अर न्हावण-धोवणनै पाणी री मोकलायत

री वडाई वो म्हारै सामै करतो धापै ही कोयनी। बात-वात मे वो मनै कैवतो कै—"हू थारै घरै खाली न्हावण-निमटणरी सुविधा खातर फकत आवू, नातर सहर मे रातबासो तो हू दाय आवै जठै ही लेय सकू। लोग आपरै घरै राखण खातर म्हारै वास्तै पिऊ-पिऊ कर, मनै देखै जठैई दोळा फिर जावै अर 'म्हारै घरै चालो-म्हारै घरै चालो री पण भारणी उगेर देवै। हू पण वां सू भेळ कदेई आसा' कैय-कैयर केई हारा निठासी पिंड छुडाऊ अर पाधरो थारै घरै आऊ। न्हावण-निमटण री वडी मौज।"

समै जोग री बात कै मनै पैला आळो घर बदळनो पडयो। पैला आळै मकान मे जिको सुभीतो हो अर उण मे जिकी सुवि-धावा ठावी ठिकाणै ही, व पण इण मकान मे ताई ही कोयनी। औ मकान तो खाली सिर घसोवणनै एक अंटो हो। छोटूलाल सातवै दिन इण मकान मे भी कुत्ता घु सावतो आयो रैयो।

पैला आळै मकान मे जठै कमरै-कमरै मे विलायती टाल्या विडयोडी ही, उठै इण मकान रो हेठलो आगणो गवा री गौर हुवै जिस तक रो हुयोडो हो। उण मकान मे जठै ठाव-ठाव च्यार-च्यार फुटा ऊंची बारया खुलती उठै इण ढमढेर मे अंडो अधारो, जडो उमर कैदयारी काळ कोटडिया मे रैया करै। उण मकान मे जठै आज कै चलै री पाणी, बिजळी, पखा अर दूजी सगळी सोरायां ही इण पण नू वोडै मवान मे फुटयोडी भीना, जिका रा लेवडा उवस उवस र आपै ही' ऊतरै, ऊदरा रा बिल जिका मे ऊदरा री लगाटर बंडे अर नीसरै अर छिपकल्यारी क्ना-रया, जिकानै देख'र मिनख रा 'जी' मिचळावण नै लाग ज्यावै।

कठैई कसारच्या अर कठैई छिलोडया, जिकानै पण देख'र आदमी नै घड धडी आवणनै लाग ज्यावै ।

छोटू लाल इण मकान मे भी पूछतो-पूछतो आयो रैया । खैर सला, आयग्यो तो आयग्यो । जिसी म्हारै कनै सुख सुविधा ही मैं उणनै दी परी । रात वासै वो रैयो परो । पण पैला आळा मावा कठै ? माछर खाया, कीडया लडी, अवक अखोरड हो पडयो रणा पडयो, अधारै मे ढमढेका मारणा पडया, सुवारी वेळा ऊठ न फेरवाडी मे जगळ जावणो पडयो अर उठै सरम नाखर, नीचा ढू ढ घातर ढू गै सू ढू गो अडा र वैठणो पडयो । जोर के कर पैला आळी-सी वाता अठै पण रैयी कोयनी । जाणै सुविधाव लारळी गळया मई परी हुव ।

पकायत ही ज अवकाळै छोटू अठै दुख पायो ।

रोटी बेळा छोटूलाल रोटी जीम लियो अर आपरै पाप पुन लाग्यो ।

मैं जाण्यो, छोटूलाल पैला आळै घर रै भरोसै अब कै अठ आयग्यो पण आग सारू स्यात ही ज अठै दुख पावणन आवै । वो, आप कैवतो ही ज हो कै उण र अठै रवण-सवण री साई कमी कोयनी' वापडो भळै पण अठ क्यू आसी !

पण कै रो ! वो तो दूज फर भी म्हारै अठ आय धमक्यो । मैं उण नै देख र मन मे विचार करयो क छोटू अठ दुख पावणन क्यू आयग्यो ? जद क उणर अठ निरी ही जागवा सोवण उठणनै है । एकर तो अंडो विचार म्हारै आयो, छोटून कय सुणावा पण पाछो बेगो ही मोळो पडग्यो ।

ता पछ एक दिन री बात । मू , अधारी रात । भिरमिर मेह
रसै । रात री एक बज्यारी-सी टेम । गळी मे कुत्ता लू-लू पड ।
ाणै काळ डाको उणन खावणनै उणरै लार नासतो हुवै । अडा
त्ता, घणो करनै हिडकिय कुत्तै न देख र भूस्या कर का कोई
टळ-अोपरै आदमी न देखर मै आ ऊपर लो दो बाता मे सू एक
ात बिल जरूर हुवैली । मै म्हारै बडोडै डावडक कैयो-'भाइया!
ाडो खोल र देख तो खरी रे ! लट इया क्यू कर भुस-भुस
ढै है ।

भाइयो उठियो अर आडो खोल र देखै तो एक आदमी
ीजळी आळै खम्बै कन धोळी-धोळी मूखै वैद री खरळ हुवै जिसी
ापी अोढया अधवावा रो कमोजियो पैरया जगल जाय र
आयोडै मिनख जिसो खुली लागरी धोती पैरया अर हाया मे कई
लियोडो सो ऊभो है । कुता उणन देख'र सागोडा कुपाळी
खावै है ।"

भाइयै रो पण उण कनै एकलै जावणरी हिम्मत को पडी नी,
जणा उण सारल पडोसी नै हलो पाड र जगायो अर एक-दो पाडोसी
इस तक रो बोलाळो सुण र जागग्या अर बारै खडा आदम्या कनै
आय ऊभा हुया । तुरत-फुरत मे गळी आळा सगळा जणा आळोच
करयो क "खम्बै कनै जाय र देख्यो जावै, अो कुण है, कोई स्या-
णियो मिनख है अथवा कोई चोग-चकार है अर इण कुवेळा अठै
पण क्यू आयो है ।"

- अंडी धार-विचार, गळी आळा हाया मे सागोडा रेरू लेय र
खम्बै कन गया ।

कुत्ता भी गळी आळा री सै पा र अौर घणो भुसणो चालू
राख्यो ।

आगे जाय र देखें तो छोटूलाल आपर कुडियोड मोडा म
बोद-सी पूर री पोटळी मेल्या अर लावरया कन मू आपरी ज
वचावण खातर एक हाथ मे आपरो सेटर अर बीज हाथ
ड टोडी लिया ऊभो है ।

भाइयें दुर-दुर कर र कुत्ता नें हट कारया अर छा
पूछ्यो 'अरे बावा थे ?",

छोटू बोल्यो 'हा, भाई ! हू ।",

भाइयो छोटूलाल नें आपरे घरे लायो।

मन छोटूलाल रो इण तरें आधी ढळया घरें आवणो जाव
वेजोगतो लाग्या पण हू क ई बोल्यो कोयनी । पण मैं उण
पाछी की आ पूछी कै "क्यू कर, ब्याळू बीजी ?

छोटूलाल दांत तिडकावतो बोल्यो— 'ब्याळू तो करसू
दिनूगे रो साव निरणो हू आतडा भागोज रैया है, है जिसा ला
दो, भाळो-माळो करर सूय रसू ।

म पूछ्यो- 'आतडा क्यू भाग्या' ढाबे मे जीम लवणो है
अर धरमशाला मे मचली लेयर सूय जावणो हो, इतरी दूर रा
रा गडक भुसावण न क्यू आयो ।' म्हारो बात सुण र छोटूला
तो मून साधलो पण एक गैबी अवाज आई । आ आवाज कैठ
कठै सू आई पण आई जरूर क— 'ढावाळो बाप थोडं
ही लागतो हो जिको अडै बूडता अर बडायलै निमधं आदम
न रोटया जीमावतो अर न माची आळो मासो लागतो हो, जिक
इण गोधं कनें सू आपरो मचली तुडवातो । औ तो था गाव
आदम्या नें भोदा वणावतो फिर है। थांन पण इणरो वर्दन-
कदं ठा लाग जासी ।" अर एक दिन एक मोटं सहर रो एक
गळी मे मन इण रो प्रतख ठा लागग्यो कै छोटूलाल खाली गोग
गाय दीसै ही है सीय इणर दीसत मे माथे पर पत्रायत कोयनी
पण किणी नें मारण खातर औ आपरे पेट मायला सींग तीख
अर नुक्करदार वारे काढ सकं ।

तॅल बानो

सुंदरी आपरै धणी सावत री बाता सुणार कैयो–"थे खालो
क बिलोवो होज करसो का कदेई उणरो टापरो पण आस्या
दिखाळमो ?"

'हालै किनी, वा तो वापडी सदा ही तनै साथै लेय र आवण
रा न्योरा करती न्यूता दिया कर" सावत कैयो।

तो आज ही चाला, थानै न्योरा करतो न्यूतो देवण
आळीरै घरै। छुट्टी तो थारै आज है ही ज। थारी सिणगारो
भी धरै ठावी लाध जासी का कठैई कूदडका मारणानै सुंदरी
आप री जीभनै दाता सूं किचरती–सी बोली।

सावत कयो–"वा तो बापडो घर सूं बारै पग ही को मेलै
नी, उणरै तो घर भलो अर का दफतर भलो।" सावत बात
नै चालू राखत आप री जोडायतन कैयो।" "हालो तो भलाही,
पण की डोळसर हुय'र तो हालो का ओही गिवारणो सो भेख–
राखसो।"

सुंदरी बोली–"डोळडाळ रो मनै पतो कोयनी, धोती अर
कोट'स मे सानपान पे'र लैमूं बाको,पदमणी वणन सूं रयी।"

'तो पैर,पार वेगो सो" सावत ताकीद करतो बोल्यो–"इतर मे

म्हारले चोळियै रै थोडी-सी उस्तरी रगड ल्यू जिक सू पाधरी हुय ज्यावै ।"

'ठीक"— कैयर सु दरी श्राप री साल मे साडी बीजी ' गई परो श्रर सावत ताकड करतो चोलै माथै उस्तरी करण ढकग्यो । थोडी ताल मे दोनू जणा श्रोढ–पैर'र त्यार हुयर श्रर सिणगारी रै घर कानी चाल बहीर हुया ।

"थप थप थप, कुवाडानै वजा'र" "सिणगारी बा श्रो सिणगारी वाई कु वाड खोल्या ।" भलै कडी खडखडा'र 'सिणगारी बाई, श्रो सिणगारी बाई ।" हेला पाडियो ।

हेलो नी सुणन सू सु दरी श्रापर गाभा मे लाज-सी मर नै लागगो ।

सावत भल श्रोपरै श्रादमी दाई हेलो पाडियो जाणै कु कर ज वाडो खोलै हो ज 'श्रो सिणगारी बाई", पण पाछो श्रोपड, त्तर नी श्रायो जाण'र भलै मघराई सू कुवाडा री कडी खडखडा श्रर सोचण लाग्यो क बात काई है ? इतरा हेला पाडलिया पण का सन गुमान नी । सावत सोचै–' घर तो श्रो ही है श्रर व कठई श्राय जाया पण नी कर । है तो घर मे ही नातर कु वाडा र तालो लगा योडो हो तो ।"

सावत कु वाड नी खुलणै सू किणताव श्रर सु दरी बारै ऊभ लाजा सी मरै । गली मे ऊभा-ऊभा श्रर हेल माथ हेलो मारता-मारता छेवट थाखता हुय'र पाछो जावणरी वेई क इतर मे बर-साली मे पग बाजता सुणीज्या । पग बाजता सुण'र व दोनू हा जठै ही ऊभा रया । श्रर मन मे राजी हुया क छेवट श्रठ ताई श्रावण

बेगार श्रँळो तो को गईनी ।"

बारणो खुल्यो ।

साद सुणोज्या - "श्ररे, भाईसा श्राप!"

सावत साद सुणा'र घर्क देख्यो तो साम एक लुगाई ऊभी है। जिकी जाबक डोकरी दाई, रग री काळीकुट । श्राख्या मायनै गुडियोडी, श्रर काळी कळूस छायोडी, मू डै मे हाड री के लाड, जाबक बोखी । चामडो सळा पडियोडो, माथै रा केश धोळाधप ताण मीणियो ऊ चाय राख्यो हुवै । जाबक कोभी -सी लुगाई जकी एक बोदी सी धोती डील माथ पळेट राखी है । इण लुगाई नै देखकर सावत रै की समफ मे कोनी बैठी कै श्र कुण हुय सकै । जद सावत सर्म जणावतो पूछ्यो—"क्यू श्रो मकान सिणगारी बाई श्राळो कोयनी ?"

'कानी क्यू , पण इया जाणता—बूफता कू कर करो हो ।" बारणै नैं सवडक खोलतो उण लुगाई कयो ।

इण लुगाई श्रादरमान करती कयो—"श्रावो श्रावो मायनै श्रावो श्राज कठीनै सूरज उगग्या कै भोजाईनै साथै लेयर पधारिया हो ।" वा श्रागै बोली- "बारै ही ऊभा रैसो काई', मायनै पधारो, इतरा कँयर वा सु दरी रो हाथ भालर कोडायती घर रै मायो लेगी पण सावत दोगड चिंती मे बारै ही खडा रैयो । पण छवट सावत मायन श्रायर बैठक मे जठै सु दरी बैठी ही वा भी बठग्यो। सावत सु दरी कानी श्रर सु दरी सावत कानी जोयो ।

सावत नैं सु दरी कनै बैठक मे बैठ्यो देख र सिणगारी नाव श्राळो वा डोकरी जिकी कु वाड खोल्या हा श्रागणै मे सू बोल'र

कैयो–"भाईसा भोजाई सू वाता करो इतरै मे मै था ? सारु चाय बणा'र लाऊ ।"

उणरी "चाय लाऊं' वात सुण'र सावत सुदरीन कयो "तू मायनै जायर उणनै बोल दे कै चाय तो म्हे सिणगारी बाई र आया सू हीज पीवाला ।,'

सुदरी शक्ती-2 मायन गई अर सामली साळ मे बडघोडी उण लुगाईन कयो-' थे कयै है कै चाय तो म्हे सिणगारी बाई र आया हीज पीवाला सा आप चाय चढावण री हैणै नेछळ नाम करचा ।"

इण बात मार्थ उण सुदरी नै पाछो कयो कै– "चाय बणता जितरै मे थारी सिणगारी पण आय जासी ।"

सुदरी पाछी बैठक म आयर बठगी ।

सावत सगै बाटण सारू वायद ही बात चलाई म "आजकाल चाय रो चरमो सगळै ही चालग्या है । जठै भी जावो अर चावै काई किणी रै आवो, चाय तो त्यार है ।"

"जमानो है ' कयर सुदरी सावत री बात [illegible] ।

सुदरी [illegible] पूछ्यो– 'थे तो भलाई [illegible] म सिणगारी बाई [illegible] रैव [illegible] पा [illegible] है ?"

सावत [illegible]– "ई बाई सू [illegible] बात [illegible] [illegible]

[illegible] ।'

सुदरी [illegible]—' [illegible] ।'

सावत कयो– 'अबक पाच दिना री छुट्टी पडण सू कठैई गई परी हुवला अर इणनै पण कठै ही सू बुलायली हुवला, मिनखा शरीर है कदे क्दास काम पण पड ही जावै ।"

सु दरी बोली– "हां, आ तो बात साची है । मिनख शरीर है, कदेई कोई काम धन्धो भी हुहि ज्याया करै ? "

इया लोग लुगाई पडी सुरता मे बतळावै हा । इतरै मे सु दरी बोली—"इणी चाय बणावण मे ताळ घणो लगाईनी ।"

"थारो नमो उतरग्यो दीसै ।" सावत बात पीवतो बोल्यो ।

'नसो तो काई उतरग्यो पण ताळ घणो लगावै जठै की खावण-पीवण रा सराजाम ।" सु दरी मन सू अटकळ लगावतो कयो ।

"ता तू काई जाणै है इण वेळा चाय कोई लूखी थोडी हीज पावली ?" सावत आप री आ बात पूरी पण नी कर सक्यो हो कै जितरै मे सिणगारी बाई चाय आळी ट्रे लिया बैठक मे पग रारयो । इया अचाचूक री सिणकारी बाईन आई देख'र सावत अचक बचकाईजग्यो, दो बाई ने देख'र बोल्यो –

"बाई थां ओ काई बियो, आज थे कठ गया परा हा ? थे घर मे कठाकर आया, घरी मोडै मायकर ता थे पकायत ही नी आया, म्हे सामै ही तो बठा हा ।" सावत भळै आग बोल्यो— 'म्ह तो थानै उडीकता उडाकता आखता हुयग्या पण बापडी थारै आ कुण आयोडी है, म्हारो तो घणो हो ध्यान रारयो आपार साथै चाय पीवण साह उणन पण बुनावातो सरी । म्हार आ तो थारै

बिना ग्रोदरगो, मनै सैलग ग्रोळवा दे दे ग्रखता लियो कै इतर
दिना सू तो कठ ग्राया पार पडया तापाछै थे मिल्या नी, हा त
ग्रा डोकरी थारी बैन है काई, थारी ग्रर इण री बोली ए
जिसी है।"

सिणगारी वाई बोली "बीरा, नी तो ग्रठै कोई डोकरी है ग्रर
न मे कठैई गई, म्हारा घर मे तो डोकरी गिणों भावै नोसलो, म
एक हीज हूँ पण बीरा थे ग्रायर नै ग्रोळखो हो खुद मिनख न ना
पण ग्राज मिनख री नी ग्राथर री ग्रोळखाण है।"

गायब्यां रो मेळ

नागोर परगन रै आथूणै गावा री वात है। उठै लोग आप आपरै खेता मे पक्की ढाण्या बांध'र बसै। आ ढाण्या मे काम करनै सियाळै री राता मे, लोग बडै ही कोड सू 'सगत' करावै। चोखळै'र गायब्यान बुलावै अर तदूरै उपरा निरगुण रा सबद अर अणभै री वाण्या गवावै।

केहडली गाव मे किसनाराम री ढाणी, किसनाराम रो सगत रो तेवडणो।

म्हारी चरणोटी रा पण ब हीज गाव। मैं भी वा गावां सू रामतोराम उठीनै जाय नीसरयो। म्हारा आसण कालडी री वाडी मे हो। कालडी और केहडली मे फकत तीन कोस रो आतरो।

किसनाराम न म्हारी ठा लागी कै मैं आथूणी ढाण्या मे रमतो-रमता अब कालडी आयोडो हू। वो म्हार कन आयो अर लुळताई सू हाथ जोड'र पगा लाग्यो। मैं अतस सू आसीस दीवि अर उणरी सुख साता पूछी। किसनाराम बत्तीसी मायकर हेत छाणतो बोल्यो—"आपरी मरवानगी सू घणो पण खुसी हू।"

किसनाराम घणी वीणती करतो मनै सगत मे आवण रो सादेसो दियो अर ऊपर सू घणै मान थको मळै आवणरो कयो

किसनाराम म्हारो आधमान करतै कयो कै—" जे थे नी आवा तो म्हार डाढो विचार हुवला ।"

मैं पाछो कैयो—" पकायत आऊला, भला ! थारै कया पर नी आऊं आ कदे हुवै ?"

किसनाराम म्हारो अकीदो मान'र बाग-बाग राजी हुय'र पाछो परो गयो ।

मैं पण म्हारै चेला-चाटयानै साथै लेयर किसनाराम रै ढाणी सागी अंड साथ पूगग्यो ।

किसनाराम रै म्हार आवणरी मेह री ज्यूं उडीकना लाग रयी ही । वो मन गायो देख'र हरखो हुयग्यो ।

उण कैयो—"घणै आच्छा करियो महाराज । आप पधारया । म्हार माथ मोटी किरपा करी । आपरै आवण सूं म्हारी घणी सोभा वधसी ।"

म मीठास सूं पाछो उथलो दियो—"थारी सोभा हुया म्हारी घणो जीसोरो हुवै ।"

गढ साळ रो वारलो मोटो मूं पो जिणमें पच्चास मिनख सोरा-सोरा मा ज्यावै इतरो वटो । मनै किसनाराम इणी भपरै मे एक पत्रवाई बाजोटर माथै तेवडो कामळ बिछा'र बैठाय दियो ।

सगत मे आसला पासला गावा सूं आयोडा मिनख सौसैक रै अडगट ।

गायबी चौसळै रा बाजोदा । सानरा साज बाज लियाडा । गायच्यारी न्यारी-न्यारी जूट । पै'लो जूट म मुदामुणी हम

ास कामड, हेमदास छोरलो सो, पच्चीस–तीस वरसारो मोटियार
ाढो जचतो सो। सागीग्राळ चेतन, कोई चाळीसेक वरसा रै
ागै वग।

दूनी जू ट रो मेढी जेठादासजी र घोरै गे गोयददास, हेमदास
े जोड नोडै। साग सावतो ग्रर गरणो गे ढाणी रा ऊदानाथजी
सघ। ऊदानाथजोनै तो घोरै मू ग्रावतो वेळा गोयददास ग्रर
ावत साग ले लिया हा, बाकी घोरै सू तो ग्र ही दो जणा वुवा हा

तीजाड गायव्या रो मडळो लाधूदासजी री। लाधूदासजी
नालडी र रामदेवजो रै मिदर रा टिकायत पिडत। ऊमर मे दूजा
करता कई पाका। गाभ–लतै सू सागीडा सज्या वज्या, डील मे
डीगा पण वैर सू साव गरीबिया।

छुटकर गायव्या मे जाखाणियै रा प्हाडसिघ, भू डल रा
देवादास, खुद केहडली रा सुरजोजी सुथार ग्रर चित्ताणै रा वसी
महाराज! ग्रै मगळा इसा गायबी क इणारै तोल मे दूज गायव्या
रो मोल विक जाव। ग्रे से एक सू एक ग्रागळा ग्रर एक बीजे सू
सिरायत।

सगळा होज जू ट ग्राळै गायव्या कन ग्राजरी चलगत रा
नू वा-पुराणा समचा साज-वाज ग्रर वै सगळा गाभै चोरडै सू टाटियै
भात बण्या ठण्या। ग्रोपता ग्रर देगा–दिस्टो मे घणा फूठरा लागता
वेई जणा ता ग्राप रै गळै मे माटोडै बोरियै तुल मू गे रा कठा
घाल राख्या एक जणै काळी मिच सतूल मिणिया री रुद्राक्ष री
माळा पै'र राखो ही।

सियाळै री रात हुवणै सू सैग जणा प'सी वामळा ग्रोढयाडा

झूंपै रै पाल रै सारै जम्योड़ा बैठा हा । झूपड़ै मे दीयै रा उजा
हो । सगत मे ज्यू-ज्यू दूजा मिनख आवता गया, वै सगळा हो
भीड साकड मे बैठता गया । कैबत मे के'यो है कै "सैण तो सकै
ही भला ।"

नागोर रै आथूणै गावा रो ओ सुभ्व कै अठ र मिनखा
चिलम तम्बाखू रो चरसो आबक कमतो । अठै रा विश्नोई, सि
रामस्नेही अर जसनथी जाट तमाखू नै बस पडता साकडै हीज
आवण देवै । कामड बीजा भी अंडी रळी मिळी सगत मे होवै
बीजो नैडो नी आवण दय किणीन पीवणो हुवै तो ओळातरै जाय
पीवै ।

झूपड मे सै'गायबी आप-आप रै ढब सारु बठग्या । सभा
राणोराण भेळी हुयोडी । लोगा मे 'अब गायबो पोळावै अब
गायबो पोळावै' रो गोरबो चालू । इतरै मे एक बडेर मिनख कयो
मळै किण री उडीकना है, रात आधी आवण नै लागी है रे !
अवै क्यू मोडो करो हो ? पुळावो रे भाई गायबो ।'

बडेरै मिनखरी आ वात सुणी कै गायब्या रा कान खडा
हुवा । अवै तो आपोपरी मे गावण सारु गिगरत करणन लागा ।
वो कैवै पला थै गावो । अै कैवै पैला थै उथेरो । इतरै म एक
जणै वोच मे बोलत थकै कयो- "लाधुदासजी सगळा मे बडेरा है
पै'लो अै हीज उथेर सी ।"

आ वात सुण'र लाधदासजी वोल्या-ना-सा, म्हारी अठ कै
चिकारी है । ओडी के ओकात है जिका हू पै'ली गाऊ ? व आगे
वोल्या - 'हाथी तुलै जठै गधा काण मे जाव ।' इया कैय'र आप-

री लुळताई दरसाई ।

लाधूदासजी री मा वात भुण'र हेमदास रो सागीवाळ चेतन वमक्यो अर बड बोल, मे पाछो बोल्यो-"आ कदेई पै'ल करी के ?

चेतन रो बात सुण'र जेठादासजी रै घोरै रो गोयददास बेघाळे ही दगड नाखतो बोल्यो- 'आ पै'ल' नीं करी तो थे कर देवो । थारी तो गढ लका तोडघोडी है, जीत'र ।"

गोयददास रो ओ मैणो सुण्यो के हेमदास अर चेतन रै चरडको सो लाग्यो, जाणे तेल रो तडको दियो है ।

गायव्या मे इण तरै आपोपरी मे बद सबदा री बटावट बाजती लागी तो जाताणियै रा म्हाड्सिघ बातनै रस्तैसर साबट ता बोल्या—"थे रीस नी करो तो मैं मनाऊ गणेश सू ड सूडाळ नै

"अबकै ठीक रैसी गावो ! कैयनै सगळा ही म्हाडसिघ री फैंमी वात री लड भारी ।

म्हाडसिघ- "सू ड सू डाळा दूनदूनाळा" गाय'र ढब्या ।

म्हाड्सिघ रै ढबता ही हेमदास री जूट मे मजीरा री झिणकार उपडणनै लागी अर तन्दूरै रै कम्ये तारा माथे अणमैरी निरभै वाणी गाईजणनै लागी ।-हेमदास आप री सबद पूरो करतो ढब्यो ।

हेमदास र ढबता ही लाधूदासजो भडक चूट आळी अडवी खडी करै, जिसी वाणी गाई । वाणी रा बोल इण तरै हा—

माटी घडनै लगी कुंभार नै खातीनै छोल रैयी लकडी
सूई तो दरजी नै सीवै
भोजन वैठ चूलैनै जीमैं
दूध दही सैं घीमे निसरै

सोनो घड़ै सुनारनैं बिल्ली न मूसा पकडी
खाती नैं छोल रैयी लकडी
आधा देखे बहरा सुणै
पांगळिया परवत नैं तोलै
इण रा अरथ विरला खोलै
खायगी नार भरतारनैं आ उलटा बेद री झकडी
खाती नैं छोल रैयो लकडी
धरती वरसैं अम्बर भीजैं
कटै कुहाड दरखत सैं सीज
बीज पकड हाळीनैं बीजैं
लोहो घडै लुहारनैं जाळानैं पूर रैयो मकडी
खाती नैं छोल रयी लकडी
बकरयां रैं सिंघा रा खाणा
मछली खा पकड्या मरदाणा
सुखीराम रा भेद नही जाण्या
नै ! चूडी घडै मणियारन बाण्यानैं तोल रैयी तकडी
खाती न छोल रैयो लकडी

लाधूदासजी रै आ वाणी गाय'र ढवता ढवता हेमदास तदूर रै सागी सुर मे आप रा सुर रळावत सैंजोड वाणी गावणी सुरु करी—

इक लूंका पकडयो सेरनैं बैठो है कान पकड कै
सब जीवां न मार लू कडी
खासा मोटी हुयगी मोगडी
पकडी बा सेर री थोवडी

मारण लागो सेर नै छोडया है पिंजर जडकै
— इक लू का पकडया सेर नै
गादड सिंघ ले श्रायो टोळी
सुसियों के म्हे फौजा बोळी
लू का कै मचादयो रोळी
लू ट नेवो ससारनै कुण जीतै म्हा सू लडकै
• "इक लू का
घघू कोचरी सेही खाजा
तीतर बुटबड बुगला राजा
वैद्यो क'वै हू सब रो राजा
श्राट मर्क नी वारनै सैं' भागं म्हासू डरकं
" इक लू का
देई देवता डर कै भाग
भाज गयो विरमाजो श्रागै
जम देवता सूत्यो जाग
कै'वै शकर छद बणाय कै इदर भी सुरण के धडकै
" 'इक लू का " —

लाधूदासजी श्रर हेमदास री गायोडी श्रेडी-श्रेडी बाण्या सुणी जद गोयददास रै जी'मे ध्याई-फाई लागगी। गोयददास ऊदानाथजी साम श्राप रो मू डो फोर'र कान-वातो करी क' 'श्रबै तो ऊदानायजी, कोई श्रंडो मडबो श्राळो श्रर श्रडीखम सबद गावो नी तो भरी सभा मे मानसो जासी स्यानमिस्ट होसी, श्रापा रै धोरै रो नाक कटसी।' -

ऊदानायजी छटयोडी रकम श्रर फैरोज्योडा घोडा वै

आटी लगावै तो अ डी लगाव वै काढया ही नोसरं नी।
वै अडयो अडावै जणा मोटे-मोटे रावणया रा मुहाणा फार नाखे वयू के व पूरा तरक बाज। बात माथे बात अडी अडाव जाणे मूळ मे हळ अडियो हुव ।

वै गोयददासने कैयो- "तू इतरी काई का लाव है? मैं आ गायक्या रो जोम, हाथ दाय कठा'र छोडूला, तू तन्दूरो साम हू गीरू ।"

गोयददास तन्दूरं रा तार मागीडा कस लिया अर खूटिया टरका'र थिर करलो । अब ऊदानाथजी रा रो करियो अर मू डं माय मुळकावण पसारता गायवो सुरु कियो-

अवधू, बडका बीज बिस्तारा, कोई जाणं, जाणन हारा
आपो आप ओर नही बीजो आपो आप पसारा
भाई भया भतीजा मेरे, बाप भया घर वाळा
दादा है घर पोता मेर सुसरा है घर साळा
भार्या है पुत्रो घर मेर सासु भई लुगाई
भोजाई भतीजी मेरे साढू-साळी जाई
नाना है घर मामा मेरे, नानी मेरी माई
मामी, मेरा मामा जाया, माता रै घर बाई
बेटो मेरी जाई जाया, भूवा जाई दादी
काकी मेरी काको जायो आ गत अददी अनादी
मैं ही मात तात सुत भ्राता मैं ही मेरा गोती
पुत्र वधु घर इमडी जामी हुय गई मेरी पोती
मैं जग मांही जगत मुझ मांही मे जगत सू न्यारा
आपो आप मे वठा दीसे आप उपावण हारा ।

वट मे बीज बीज है वट मे इसडा वट बहु भीणा
कहत लालगर सुण रे पूता उपज हुवा सब लीणा

ऊदानाथजी बाणी गाय'र थम्या क, साभळ्'र इणन वा' धाही' दीनी अर कैयो 'धिनधिन है थारै मात–पितानै – थाछो ज्ञान गोयळो खोली है, थे । पण इण ज्ञान गोयळीनै जाणै जाणन थाळा ही ।'

ऊदानाथजी हा भाई, अंडै ज्ञाननै गावा तो आपा सगळा ही हा ? पण जाणै इणन कितरा लोग है, इणनै जाणसी कोई सुगरा रुचियां रा ही ज।" आ कैयनै ऊदानाथजी आप री गभीरता दरसाई।

ऊदानाथजी रो गायबो अर गलरस अंडो मीठो मधरो अर सोवणो–मोवणो हो, जिणकर सभा मे रग जमावणो उण रै एक सहज बात ही।

ऊदानाथजी ज्ञान मे दो पग आगळा मेलता बोल्या–"बाणी गावा तो आपा सगला ही हा, । पण अरथावणो कितराक करै है ? अंडी वाण्या बिना अरथाया की पल्ल पडै नी।"

ऊदानाथजी भळै आगै बोलता कैयो– "आ भाई हेमदास हैणै गायो कै लू कडी सिम रो कान पकड लियो अर आ लू कडी सगली जिया–जूणनै खायगी। इणरी फोज कुण ! गादडो अर सुसियो पण इण रो अरथ काई ? बयू, हेमदास, अरथायसो गाई जिकी पाणी' । कैयर ऊदानाथजी सभा माथै आपरी निजर नाखी।

हेमदास ऊदानाथरी बात रो पडूत्तर करतो बोल्यो– "पै'ला लाधुदासजी हीज बाणी अरथाय सी, कारण कै लाध–

दास जी टिकायत हैं अर आ हीज अंडो गायवो पैला मुर
करचो। जद पण पला अं हीज अरथायसी वाणी।"

लाधूदासजी ढोळो रा भोळा पण सगत माय व ठियोडा।

लाधूदासजी कँयो —"मैं तो जद अरथावतो जद हेमदास म्हारी वाणी मायँ तोड आळी वाणी नी गावतो तो!

लाधूदासजी री बात मायँ हेमदासनँ बोलण नँ जागा लाधगी।

हेमदास कई भिचकतो सो वोल्यो—"जणा तो ऊदानाथजी ही वाणी अरथाव सी, म्हारी वाणी मायँ आ तोड आळी वाणी गाई है।'

हूss, ऊदानाथजी मुळकता सा बोल्या—
ऊदानाथजी भळै आगे टुणकलो नाखता बोल्या -' ओ चेतन कँ'वे होनी, लाधूदासजीनँ क आ कदेई पँ'ल करी कँ।

चेतन ऊदानाथजी रो औ टूणक्लो सुणता पाण चुपचाप जाड। वोचग्यो। चेतन रै चेतन मे चेतो हुवै तो बोलै।।

सभा आपोपरी रै सबदा री लडाई मे बोलीबाली बठी ग्यी। जाणै चिडकल्या मे भाटो नाख्यो हुवै।

सभान बोली बोली देख'र ऊदानाथजी बोल्या "अरे सगळा ही सास कूकर साख्या? अरथाबोरे भाई! गाव जिकन अरथावणो ही चाहीज। अरथावै जणा तो गाये रो कई रस पण आवै अर अं जिका मिनख इतरी भू चाल'र आया है, आनै भी कई मोम वधे। नी सवा देखल्यो थे!"

ऊदानाथजी आगै मळै आप री वातनें खाचता बोल्या—'घणा दिना री बात कोनी काल री हीज बात है रतिराम

सिराणरी ढाणो मे वाण्या गाई, एक सू एक बेधतो। अठ आगा आळी जिसी वाण्या तो अरथावता मोटै-मोटै ज्ञान्या रो आह्या दुखण नै लाग जावै। वाणो किसी'क। जिके री कै पूछो हा ?"

एक जणै विचाळै ही बोल'र कैयो–"कैया जाणीजे ?"

ऊदानाथजी वा वाण्या री सद करावता बोल्या-"वा वाण्या री सिरे ओळी ही

1 कोडी चाली सासरै, नौ मण काजळ सार

2 सूसियो आळ सिधा सू खेलै

3 पढियोडा पिंडता करोनी विचारा, पै'लो पुरुष हुया क' नारी एलो।

4 बारा वरस सूं बाझ ब्याई पुतर लाई पागळा

5 विरछ एक ऊग्यो भोमी पर नहीं पान नही डाळए नही पात नही छायाए

6 नदी कै किनारै अवधू घूसली जुऊगी पेड मछलिया छायो एलो।

अडी सी और पण कितरी ही वाण्या गाईजी। पण आ वाण्या रो अरथ रतीराम अरथायो जठै रतीराम नी नावडियो उठ मे पण सायरा लगायो।'

ऊदानाथजी री बात सुण र प्हाडसिंघ बोल्या– 'बात तो साव साची फरमाई आप पण महाराज, अठै तो था सू बती कुण है जिको अडी वाण्या रो अरथावणो करै ?

'नी भाई मैं गायबी हैं, मैं तो खाली महाराजनै अठै आया सुण'र सावत रै साथै बुवो आयो।' ऊदानाथजी बात री

स'ळी सारता वोल्या।

'तो महाराज नै अरज करा के अथ करणं सारु।' एक ज
कैयो।

ऊदानाथजी बोल्या–"महाराजनै क अरज करा महाराज तो ज्ञान रा समदर है। अठे तो आपारो वात चाल'रैयी है" ऊदानाथजी सरधा जतावता कयो।

सभा मे सू एक जणो वोल्यो- 'का तो भाई कई कं'वा नातर आ कै वो कै ओ कामं म्हारै डब रो कोयनी।'

अबै तो सभा मे सू केई जणा सागै ही बोलना कयो-'अर यावो वाणी हेमदास।'

पण हेमदास तो जाणै हेम हुयग्यो हो। वो केई ताळ वाल्यं कोयनी।

ऊदानाथजी नै अंडो ढग देख'र भु भळ आयगी। वे आपरै गोडा नीच दियोडो टोराक मरकावता वोल्या-'अं भाई ज्ञानी हैं जद मै ज्ञानरो गहरो गम मे जावन गुडग्या नी, हेमदास बोलतो तो खरी'।?

हेमदास अथ कई आप रा माथो-ऊचावतो वोल्यो-"महाराज (ऊदानाथजी) मैं तो साची कंऊ म्हे तो खाली गावणो हीज जाणा अरथावणो म्हारं ताबे रो।काम नी।'

सभा मे सू एक जणो कई मीठास सारतो वोल्यो– 'महाराज ऊदानाथजी हेमदास थारं आगं कोडी'क चीज, जको थ। थका वाणी अरथावण री हिम्मत बाधे'"?

ठीक है पण, वात मी ढळतो आवणो चाहीज।'
ऊदानाथजी कंयो।

भळै एक डाकरै बोलर कैयो-"ऊदानाथजी थारै आग सगळा
ाम्वा हाथ पसार दिया है, सीधा लग-सा हुयग्या है। अबै तो
ा ही समझावो।"

ऊदानाथजी गहराई रै भाव मे बोल्या—"हा, भाई, अबै
यू नी अरथावा, तो ल्यो सुणो-

लू कड़ी नाव माया रो है सिध जीवात्मारो नाव है, मा या
ा वध'र जीव मर अर जलमै। ओ ही जगतनै खावणो है।
'मनख रो ओ नानपणो गादडो अर सूसियो है जडपणो (अज्ञान)
रर सासो ही घग्घू अर कोचरी जाणो, वैइयो ही अभिमान है।
जठै अ रै'व उठै देवी-देवता रो के काम ? वै तो उठै सू भाजसी,
ासी हीज।"

ऊदानाथजी रो ओ छद्धम अरथ सुण'र एक जणै लाधूदास
ी गाई जिकी वाणी रो अरथ पूछ्यो-

ऊदानाथजी लाधूदासजी गाई जिकी वाणी रो ओ अरथ करयो-
'माटी सू हीज सगळा रै शरीरा री रचना हुवै अर लक्डी अन-
ाळ मे सगळा रै शरीरनै बाळ'र पूरो करै। ओ हीज खोलणो है।

समै री सूई जगत रुपी दरजी नै सी'वै अर शरीर रुपी चूल्हे
ै काळरुपी भोजन जीमै। तत्व रै मा हीज आछी चीज है। सोनै
ारीसा सदगुण हुवै जणा सुनार रुपी शरीर रो घडीजणो है।
जिका मिनख आप री बार भटकती विरत्यानै ससार कानी सू
हटावै, अ तर री आत्मानै देखै अर जोग ममधी मे अणहद सबद
सुणै। मोल मिरजाद (निर अभिमानी) सू न्यारो रै'वै उणनै
हीज पागळो जाणो-जिकै मायानै कडखै कर नाख्यो है आपरै
तन-मन सू अर आत्म'रै भाव मे र'वै वो हीज पागळो है।

जिको अभिमान रै परवत न तोल । माया ही नार है, आ ही आपरै जगत रुपी पति नै खाय रैयी है।"

सभा ऊदानाथजी रो अंडो समझ मे आवण आळो अ सुण'र घणी पण राजी हुई अर ऊदानाथजी रो घणो आदम करयो।

सभा मायला मे सू एक जणो बोल्यो थान मागै की पूछ हुवै तो पाट मायै बठियोड़ा महाराज नै पूछ लिरावो। मै बात आयो मौको क्यू खोवतो हो, मैं कंयो मनै वेलाथको ज्ञान हो ऊदानाथजी री अरथावणी समचै बीचो कुण पण ? अै व्हाईसिघ पण अरथ अछोतो ढुकोवे है। आ वाण्याने नाडी बोनी मे उघ वाणी कैव पण शास्त्री री बोली मे आ हीज विपयय बात कुहावै। कबीर, गोरख, आसाभारती, हरीराम बनानाथजी अ आज रै जुग रा लाधूनाथ अर विवेकनाथजी जडा योगी आर वेदान्त सू मेळ खावण आळो अरथ बैठाव। चूडाराम, रूडाराम बिहारी दास अर नवल रामजी जिसा ज्ञानी सता अंडी वाण्य मायकर उपनिषदा रो ज्ञान पावू दुनिया सारु आ वाण्या मायका प्रगट करै।

इस तक सभाने राजी देख'र ऊदानाथजी हसता मुळकत सा गोयददास कानी मू डा फोर'र सेन करी कै 'किसी क रैयी ?'

गोयददास राजी हुयोडो पाछी सेन री भाषा मे हीज कयो "खाड खोपरा सी।" अर मिसरी माखणा सी।

संपादक

केई दिना ताई घणो अर चौतरफो सोच-विचार कर'र एक जणै अखबार काढणो पोलायो । सपादक आप री जाणमे अँडो स्याणप सू छापो काढणो चालू करघो क मत पूछो । छापै सारु सपादक रै जी' मे कोड घणो, हियै मे उमाव घणो ।

छाप रो ऊपरलो- 'मुख पानो' कोई देख तो देखतो ही रैय जाव । मनीराम छापैनै देख'र ललचावणनै लाग ज्यावै जिया भैंस न देख'र पाडियो डीडावणनै लाग ज्यावै अर टोगडियो गाय नै देख'र हुरकणनै लाग ज्याव । छापै रै ऊपरलै पानै माथै फूठरा चित्राम, रग-बिरगी लिकोळया, मैन सुखाळी छिव्या, सै चढू ड आक (आखर) अर मायलै पासै रु काटा खडी करणाळी खबरा । छापै रो पैलडो पानो इसै-वियै चितेरै कलम सू थोडो ही चित्राकीज्यो हो । ओ पानो तो सपादक खुदाखुद हाजर रैय'र नगर र नामी कळाकार सू हाथोहाथ रोकडी दाम देय'र चित्राकोयो हो ।

सपादक अखबार काढणै मे अर आप री नाववरी खातर मरघो जोव । सपादक आखो दिन आप री नाड हेठी नाख्या लिखा-पढी में लाग्यो रै'वै । कई कूडी अर कई साची खबरा छाप्या सपादक रो जी' मोखातर पावै । इण रो जणा जावतो जी सोरो हुवै । सपादक राजनीति मे पण अँडो नासै, जाणै अवै

अळूझ्यो नै घडी माय अलूफ'र पडचो ।

सपादक आप रै च'रै मो'रे सू खासा फूठरो, डील सू क
सूल सूल नी थाक्योडो तो नी घणो माता ।

सपादकनै उपरली हसी हसण री खासा रवद । लुळता
मे हाथ जुडता ही वत्तीसी खुल ।

सपादक री आस्या री जोत इतरी घणी तेज कै उण
आगली पाछली अर एक री दो सूझ तो ही पण उण दाम मा
मडा'र चश्मो लियो है । लिखा–पटी घणी चश्मो उतारचा ही
सुलसर हुव पण जोर के, करै बिना चश्मै र लोगा माथ प्रभा
की कम पडै । वो घडी–घडी चश्मो उतारै अर घडी-घडी पा
लगावै । सपादक किणी सू बात करता थको चश्मै न हमाल
पूछतो रै'व ।

जिकै दिन छापो प्रेस सू बारै नीसर उण दिन ओ ए
आदमीन आपर साथै तिया–लिया इतरो उतावळो–उतावळ
चाल'र चटकै सी थारै–म्हारै हाथा मे छापो पुगाव दिरावै जा
मोफडदान मे होज लका लुटावतो हुवै । अर जिकै दिन सपाद
छापै रो अ क लोगानै देवणन जाव उण वेळा ओ आपनै सगळा सू
मातबर अर लूठो समझ । ओ आपर मन मे जाण कै सहर रै सैं
लोगा माथ म्हारो प्रभाव पड रैयो है । ठीकरी रै लाल रग ज्यू
जिको नी धोयो ऊतर अर नी माज्या मिट ।

स्याणा आदमी मिनख री थो'मो' लगा लिया कर क आ
आज पोमाईज्योडो है । सागीडो मोदाईज्योडो । पण आ बात उण
रै मू डै माथै कय'र कुण खारा तु'बा तोड इण रै मू ड आगै स
मनरखी अर मीठी बडाईज करै ।

लोग बडाई करता क'वै -"आछा गुणी हो थे, देश विदेश री समूची खबरा छाप नाखो थे ता। थान समच कू कर ठा लागै है, आ वाता रो ।

कोई वीर बैताळ मेयाडा है कांई थारो !
आगे रै जमान मे सेवडा अलगो सू अळगी अर आवण आळै वगत री वात रो पतो लगा लेवता ।।'

सपादक लोगा री छदेमद रो अडो मोठी वाता सुण'र घणो पण राजी हुवतो ।

सपादक बिया मन सू साव भोळो हो पण आपनै वो गजब रा गोळो समझतो।

सपादक मोटोडा आदम्या सू घणी पण सेदमेद राखतो पण गरीब-गुरबै माथै मीट ही नी नाखतो । जद कै सपादक बण्या सू प'ला ओ हमेशा ही गरीबा री हिमायत करतो हो। वो उण राज तेज आळा सू मोकळी घालमेल राखणी सुरु करदी ही। हेठलै सिपाही सरडानै तो वो साव गिनारतो हीज नी। वानै जू जितरा ही समझतो नी ।

जे कोई सपादक री गिगरथ करतो तो वो काना मे तेलघाळर वैठे ज्यू बैठ जावतो । किणी री बात माथै धान नी देवतो हो पण मन मे अैडा रो नाव लिख'र राखतो अर कैतो वख मे आयै ठा घाल सू 'ऊपरलै मन सू क'तो 'आज री दुनिया है कोई आछो बतावै कोई माडो" ।

सपादकनै नैं'चो हो कै लाभ आळो सुणणी अर वै लाभ आळो नै कोरा कारा जाण'र छोड देवणी । बिना भोगै पडती काना ही

वयू ढोळणी।

सपादक पण छापो काढ्या राग्यो। कागद अर छपाई रा पइसा लागता गया। सपादक सोचतो जिवं दिन छापं रो चादो भेळो करणनं ढूकू ला, उण दिन लोगा सू मिंट दो मे कानो खिचाळो कावरो देय'र दाम लेयनू ला, मनं कुण नटॅलो ? किणरा भोगना किस्त खाया है कं मनं नटॅलो।" यो आपरं मन मे इस तर मनचूरिया लाडू फोडतो। वो सोचतो वं जद चदे री रसीदा कटणो सुरु हुवॅला, तापाछ नाणं री ताई टाण नी रंवं'ला। अरडाट करतो धन आ पडॅलो।"

लोग जाणता कं सपादक ओ छापो खाली उपकार री भावनानं लेय'र काढ । आ कुण जाणं वं एक दिन वो छाप रा पइसा माग वॅठेला।

सपादक आपरं मन सू गाव रं आख लोगानं गायक बणा माल्या है। छापो तो सगळा ही पढं, लोग छापो पढता जावं अर उण री सरावना करता जावं। वं क व 'सपादक परउपकारी जीव है" लोग क वं 'जिको आप रो विगाड अर जगतनं सुधार उण र जस री जडा पत्ताळ मे गुडं।"

इण तुमार सपादक आपरं छापरा मोकळा ही अ क नीसार चुकयो हो। पण छाप रै सपादन मे अर घर मे ऊजळो खरच लाग्यो, बाजार री मोकळी रकम माथं हुयगी। लोगार कूडियं-गैल खरच बधतो ही गयो। लोगा रो काई, लोग तो 'लूखा-लाड खरमा घणी करता रैयग्या। जणो-जणो पइसा मागणनं पण पल्लं पइसो एक'पण पडयोनी'खाली उण गाव री कु वराणी धाव। अवं तो सपादक रं घणी मुसकल हुयगी। जठी कर

नीसर लोग गाभा फाडै, जणो जणो 'दचो-दचो' करर खालडी खावै। मागतोडा खल्ला खोल'र लार पडग्या। एक बोजै नै ओ पतो हुयग्यो क सपादक रै वो 'उतरा माग वो जितरा माग।' मागतोडा सोच ले पडसी जिको जीत मे रै'सो, नीतर इण फकीरमल सपादक कनै मरयोडी माखी ही देवणनै कोनी। प'ली तो 'हम चौडा गळी साकडी' करतो बापरो सो माल बजार सू तुलालियो। लोगानै पै'ली जणायो क सपादक परळी खुदा हुव, उण र पाईमा टक्का री वे कमी। राजतेज आळा रै साथै ऊठणो-बैठणो पण अब कठै गया व नीजु? चुकावनी सपादक री बळी? नीतर लोग तो डूब्या जका डूब्या ही सपादक जीवतो ही मू डो दिखाण लायक को रैयोनी।

सायरा साची कैयी है क 'लुगाई रो खसम मोटयार अर मोटयार रो खसम मागतोडा।"

सपादक रै जद च्यारा पासी सू चू टाचू टी लागगी जद उण सोच्यो "अबै तो कूवो-पासी करणो हीज पडसी।' मन मे पक्को भरोसो हो कै "चदो चालू करता ही करजदारी रा मोरिया पीऊ पीऊ करता उडता निगै आसी"

सपादक रसीद बुक साभ'र नीसरयो, आपरै अखबार रो मासिक-वार्षिक शुल्क वसूल करण रो श्री गणेश करयो।

बो दामा सारू उगाही करणनै अगूण सू आथूण अर दिखणाद सू उतराध, अंडै-छेडै, पासै पसवाडै गळी-कू चळी, हवेली दरुजै, हाट-थाट अर बजार सगळै सरम नाख्या फिर आयो सामण रो बेटो जाण'र एक साल रो चदो दियो पण रसीद भरण री मनाही करदी। उण सपादकनै अखबार काढण मे

जिकी ग्रवढी ग्रखबाया ग्रावै, वार वारै मे पण चरचा करी ग्रर देश–समाज' री मोटी सेवा ग्रखबार मायकर हो सके रा पण विचार कियो। उण सपादक नै ग्र गद ग्राळो पग रोप'र ग्रखबार काढै जिण तुमार काढण रो उमावो चढाया रण सपादक र तो चित्या री हाडी खद बदावै ही।

बाकी रै लोगा तो जद सपादक छापै रा दाम माग्या तो वा निराताळ री वाता कैयी।

एक जणै तो कै यो कै ग्रै डो काई सपादक जिको पाठका सू वत्ती पईसानै समझै। म्हे तो ग्राज तकायत ग्राही सुणता ग्राया हा क ' मिनखा री माया है ग्रर रू खा री छाया है।''पइसो तो हाथ रो मैल है। दिया लिया तो डूम राजी हुवै, मान वडो क्तानी ''म्हे तो सदा सू सपादक जी रो मान करता ग्राया हा जद थे म्हारी दूकान ग्रावता जणा म्हे सगळा पगा ताण थार साम खडा हुय जावता, ग्रा तो था सू पण छानी कोयनी।

एक दूजै कैयो— सपादक जी महाराज, थे तो साजोग सू बामण रा बेटा नीसरग्या, बामण तो खाली हाथ जाड्या ही राजी हुय जाया कर पण ग्रबै ग्रो क बरतारो ग्रायग्यो कै बामण ही लोभ-लालच करणन ढूकग्या।

एक बीज ग्रादमी ग्रा कयी—' ना महाराज, कागदा रा

थाय रा पइसा, थे ग्रठै ग्रगवार फैंक जाता जद म्हे उठा र बाच लेता ता पछ उण मे गुड घाल'र काई ना दे देता। गुडरा म्हे म्हारा पईसा ले लेता ग्रर ग्रखबार रै पाना रो थानै पुन हो ज्यातो जणा म्हे बापडा वाणिया थानै पइसा के वातरा देवा ग्रबरै कणाई सराध धावडा ग्रावण दयो दूजै वामण नै नी जिमार

ाने जिमा देसा। म्हारै ऊपर तो ग्राप मेरवानगी ही राखो
ेनूं सू लगार सिझ्या ताई पावलै री मजूरी करा ग्रर वोमेंसू
ी थानै द देवा तो म्हारा टाबर किनै खासी ? के वै म्हार बटका
रसी ! ग्रावो तो थारी दूकान है पण पइसा मागणनै ग्रोज्य
्हारो दुकान पर पग मत मेल्या।"

लोगा री ग्रै'डो बात्ता सुण'र सपादक रे काळजै मे लाट
ी खडी हुयगी। जीव रे मढ माय चिरया री झालर बाजणनै
ागगी। ग्रब करे तो वो के कर, काय मे हाथ घालै ! पछ--
ातडी सपादक र मरण ग्राळो ढग हुयग्या।

सपादक नै घणा झुझळ ग्रावै सास उतावळा चालण नै
ागग्या। चिरयारी चिणगारी जुवाला बण'र डोल नै 'धपड-धपड
ाळणनै लागगी, पण उपाय के ? सगळा साग ग्रा ज्यावै पण
इसाळो साग पइसा कनै हुया नू होज ग्रावै। नाणो कनै हुया
ी काम पेग चढै।

सपादक कनै की लुगो-तुगो हो वो ठर्ई दिना ही खा पूगे
यो। सपादक नै न्हाली ग्रो ही भरोसो हो कै "ग्रखबार रो चदो
ेलो कर परो'र बजार मे पल्लो राख लेमी पण उण री ग्रा
ेप पण खाली गई।

सपादक रो माथो ग्रब की काम कोनी करै। वो इण धामनै
िसै घड बैठाय, ग्रा वात उण रे समझ मे नी ग्रावै।

सपादकनै छेवट एक उपाय सूझी। उपाय ग्रै'डो कारगर
े जिण सू सरब दोस गधेडै रे सीग ज्यू लोव हुवता ताळ
ितरो'क सागै ? ग्रा उपाय सूझता ही सपादक रो मूडो
ुसिकरी सू पळपळाट करणनै लागग्यो। बेफिकरी रो बायरो

सपादक रै चे'रै मार्थे आयोडी उदासीनै घूरैन उडाव
उडार लेयग्यो।

अबै सपादक इण उपाय सू लाखा बाता पूठो का
आ उपाय सपादक सवा सालाना वरसो जिके मे फरक

जे सपादक इण सोच्योडो उपाय सू हट ज्यावै ता स
मे "अँडी हुवै कँ खाव कुत्ता गोर।'

सपादक न सूझियोडो उपाय इतरो सोरो भर इतरो स
को ही नी पण बीची उपाय के ? मिनख आपर मा
राखण सारु दुखन पण घणो सारो सुख मान लिया करै। सपा
री सोचियोडो ओ सुख अँडो ही हा, मतलब कै ओ हो तो बजरा
दुख पण इणनै सुख कर'र मान्यो अरदिन दशा देख्या ओ सुख ही
हो आगै ठाकुरजी नै लाज है।

इण उपाय रा भाव सपादक महाराज रै सू डी ताई खामखा
छलीजग्या हा।

सपादक नै मागताडा रो भा मौज सू पण बती लाग्या
जमडा मृ दमडा रा मागतोडा खोटा!

सपादक आपरै सोच्यै उपाय रै मुजब सहर मे ए
मौके री जागा देख'र वो आसण बिछा'र बैठग्यो। अन्न-जळ
त्याग कर'र अनखन रो वरत झाललियो। सपापक आप री मौ
नैं तँडण सारु अनखन आळी उपाय ही सोची हीं।

सपादक जद अडी जागा आसण जमा'र बैठग्यो तो सह
रै लोगा न ठाव लाग्यो दुनिया तो मजा री देखू है। लो
सारु ओ एक तमासो हुयग्यो जणा पण लोग भेळा हुवणनै लाग
लाग सपादक रै ओळै दोळै कडोजूप'र बैठग्या। मू डा जित

...त, लोग हाका डाक बात करवा लाग्या। कोई कैवै–
...दक अहार है तो टोडो में बाधा गाव सावना रो मस्त
मायो है। कैवी कैवो–"सवकाई चोरा पैल धरा हुवा है
...कान पास करावा, माल को हठ रोक्यो है।"

कोई कैवै–"पुराणा पराणो माई है, इण बात नै भला–
...पा हो जाय सकै है। सम्पादकजी इण परवी ने मोलायर
...विला।"

पैं तो वाका डाक बात जद लोगा सुणी तो ओर सरा लोग
...वा हुवरनै लाग्या। एक गाव रा दो गाव भेळा हुवग्या।
...रै नहर में इण बात रो हाका फूट्यो। जिको नी जाणतो
...तो वो नी सम्पादकनै जाणनै लागग्यो। चिमटकारनै नम-
...कार है।"

मानीडानै इण मायली बात रो पतो लागग्यो हो कै
...पादक मानोडा सू उथव'र मरणो तेवडियो है। जणा व ...
...नी श्राया काल नै आपानै कोई दोस्यारी मार'र कठैई दुख्या रै
...लम में पन्ह नी लेवै।"

जिकी कुवराणी सपादक नै एक बरस रो पाटो दियो हो
...णनै ठा लाग्यो तो वा पण सपादक बनै आई। आ लुगाई
...टै मा–बाप री अर भण्ये–गुण्ये घराणै री ही। अखबार री
...तन जाणन आळी ही, इसै कामारै हाणी–लाभारी सावल
जाणती ही क अखबार काढणो मगनो हुयो काम्पणो है।

उण सपादकन पूछियो क–'आ बात सिमडी है।"

सपादक आपरै मायले मन री सोग बात उणनै बताई।

सपादकनै उण लुगाई ऊभो–सीधो देख'र मणो ही ...

न अ ड मिनखा माथै अरणसो कर परो'र नौनारायण री इण द
न इस तक नाश करणो आछो कामनी । अँ थारै अखबार र
ग्रायक खालो दीसतरा मिनख है थाम्रीरै असलो रुपनै नीं माळख
म्रार प्रसली डौळ न जाणन सारु थे म्हारै इण ओढणिय मायक
देखो पच्छै मरणै अथवा जीण री विचार लेया ।'

खुगाई सती ही जद सपादक उण रै ओढणियै मायरा
लागा माथ निजर नाखी तो उण सतो लुगाई न छाडा सबरा स
लाग ओळपिचोळा जिनावर दोस्या। काई मिनख तो लू कड र
रुप में ता कोई गादडो कोई विरगडो अर कोई-कोई माकड भाक
जिसा जगल रा जिनावर दोस्या। वा मे मिनख एक ही पण
निजर चढियोनी ।

ओढणियै मायकर छण्योडी दीठ मे लोगा रो बारलो अर
मायलो रुप भलीभात म्रारया लाग्यो दीसग्यो जद पण सपादक
चटकसी आप रो आसण काख मे दाब्यो अर आपन घर काती
चाल वहीर हुयो ।

सपादक सोच्यो अ डं मिनखा माथ अरणसो कर'र मरणो
जाबक पागलपणो हो। मरणं जीण री कीमत मिनख हुवै तो जाण
पण अ तो वापडा जिनावर

रामू-धायली

दो पइसा रो कार मजूरीकरण सारु मुरधर रो वासी रामू जाट पजाब कानी गयो। रामू आप री जोडायत धायलीनै भी आप रै साग ही लेयग्यो। दोनू लोग-लुगाई मेणत-मजूरी कर दो पइसा रो आपर घर मे ओत घालसी। बिया ही धायलीनै रामू लारै किण रै कनै छोडतो? जाण्यो काळ कुसमो है। पजाब कानी जाय'र पेट भराई करसा। आ सोच'र रामू आपरै गाव सू धायलीन सागै लेय'र बहीर हुयो।

आगै पजाब मे जाय'र रामू अर धायलो एक मिय र खेत मे हाडी वाढणनै लागग्या। जद अठै काम रो नाको आयग्यो तो रामू दो पग आधा दिया पण ऊवर्ण रामू धायलीनै साग नी लेय जा'र इणी मियन मानख आळो आदमी जाण'र सभळाय दी। रामू जद अठ सू जावणनै लागो जणा मियनै कयो क "धायलीनै सोरी राख्या। ओवरण मत देया। मैं वेगो ही पाछो आवतो धायलीन अठ सू लेय जासू।

मिय पण रामूनै पूरो-पूरो भरासो दिरायो कै "धायली कान सू तू कोडी जितरो भी चित्या मत करी।

रामू सीधे सुभाव रो हो जणा पण उण मियै री बात रो अकोदो कर लियो अर आप उठै सू आगै चाल बहीर हुयो।

आग जाय'र रामू काम री पडताळ में लागग्यो। काम री

विध बैठणै सू वो काम मे भूत हुय'र लागग्यो। काम री काई कमी को ही नी जद रामू र मजूरो री कमी क्यू पडती ? रामू उपरली रत आई जतै इक्जाई काम मे लाग्यो रैयो।

रामून र-रै'र घायली चेतै आवती पण वो दो पइसा री आवत री सोरप मे घायली कानै जावतै मनने रोक'र राख लेवतो।

इया काम करता करता रामूनै आधो जेठ बतीत हुयग्यो। आधो जेठ बीततै बीततै आभो बादळा छायो अर मेह घररायो। बीजळया पळका मारणनै लागगी कै रामू री जो' गाय कान टोग डियो तणावै ज्यू आपरै देश कानै तणावणन लागग्यो। रामू इण वेळा आप री जाळ आळो खेत चैनै आयो जिको मातरो ढेर हो।

रामू सोचै " पैला वेगो देश जाऊ अर जाळ आळै खेत म हळ खडो करु। कवात है क जेठो बाजरो अर माभी बेटा भाग आळै नै मिल'। रामू खेत जोतण री धुन मे एकरगी घायली नै भुलाय दी। वो घायलीन आप रै सागै लिया विना ही पाधरो आप र गाव ढूक्यो अर सजत बैठा'र जाळ आळो खेत बा'यो।

खेत मे लीली छनरी आळै री कोप सू आछा धान लाग्यो सुरगो सावण अर भर भादूडो सातरो हुय र आयो। सा'र मे वा छिब छाजो कै जाण भगवान साग्यात ही आय विराज्या हुव। चालतो सो कातीसरो। टीडगो मतीरडो जोई लाध। कुळया-कावडिया जीम तो निरपत हुवै।

राम र मेन में ऊचा टू चा। टू च पर वठयो रामू रागली उथेरे पण रामून घायला प्रत चेता आव घायली विना साही सुवाद

रामू ऊचेड़ू चेपर बठो-बैठो बात मनै कै विना पिराणरै डीलसू अर विना पहिया री गाडी सू जिण तुमार कोई काम सजै नी उणी तुमार धायली विना रामू रो कोई काम सरै नी ।

रामू रो मन पलक-पलक धायली धकै धावै उणनै अवै धायली बिना धाप कठै? धायली बिना रामू आकळ बाकळ हुयोडो र'वै। वो सतरो वतरो सो हुयग्यो। जाट रोही री रुत मे मेह वरस्या बीजा सगळा काम छोडर पला हळोतियो करणो चा'सी पण पच्छ तो तुगाई री चितार कर हीज।

एक दिन रामू समग आधी रात रा उठियो अर गैलै सारु चायतो चीजा आप री पेशो मे जचाई अर धायली नै लावण सारु पजाब कानी धूगाडै चाल खडो रेयो। तापच्छै रामू आपरै पगा न कठई ठाव्या नी। धायली रै कोड मे रामू चाल्यो तो इसो चाल्यो कै आठ पोर मे सागी ग्रं'डै जा पूग्यो।

रामू ताकड कर'र सागी ग्रं'डै पूगतो गयो पण अठै रामू न समचार की भूण्डा हीज मिल्या।

जिक मियै रो रामू इतरो घणो विश्वास कर्यो हो, वो ही रामू र साथ इण तक रो धोखो करयो क उण धायलो न भगरार आपर घर मे घालली

अठै आवता रामू जद आ सुणी तो उण रै जो मे कई बाकी नी रयो। रामू रै एक चढै एक उतर पण वो अब करै तो के करै गतागूम म की बैठी नी। रामू रो काळजो होळी धुकै ज्यू धुकण न लागग्यो। होळी झळ सी झळ उठणनै लागगी। उण रो डोल तोवो तप ज्यू तपणनै लागग्या। कणा ही रामू आप री मा लप पर च्यार च्यार चोसरा नाखै तो कणा ही वो मीयैरै विश

वास घात री रात मे चंती वर'र खाग श्रासू टळकावै । पण आर राम रा श्रठ श्रागळ जितरो ही चालै नी । रामू जे श्रठैरी पचा यत मे श्रावात राखै तो ही पण उण ी तो श्रठ सावलसर पग श्रावतो दास नी । रामू वातने च्यारु फेरा सोच'र श्रन्ते पन्त ढीलो ढरर हुयर बेठग्या पण इस तक ढीलो हुयर इस तर्क ढीलो हुयर बैठा सू काम कू कर चालै । श्राखर रामू जाटरो बेटो हो, कवत मे कैयो है कै जट विद्या श्रा जावै पण जट बुद्धि का श्रावैनी । जणा रामू नै गोई न कोई जट बुद्धि उपजावणी चाहीजै ।

रच्छे राम् मय् पाछ राख हो, उणा एक जट विद्या उपजाई श्रर उणने पजोली ।

रामू श्रापरो वेश बदळयो माताजी र भोपै रो सातरो सा साग वणायो, कडधा मे मोटा-मोटा घुघरा बाध्या एक हाथ म डैरू लियो श्रर बीजोडै हाथ मे काचळी बाध्योडो तिरसूळ भाली श्रर ता पच्छ उण घर-घर फरी घातणी सुरु करी । रामू घर-घर जायर रागळी उधैर श्रर तान तोड । मूडै मे गोळा गिटकाव श्रर मूडै सू सूइया नीसारै । छुरी पलारै श्रर श्रापरी जीभन डाळ-डाळ कर नाख । हथाळी पर वास्तै जगाव श्रर मूडै सू भळा काढै । राम जिकी दिश मे मूडो फोरै उणी दिश मे लोगो रोनडो जूप ज्याव । रामू घर-घर श्रर गळी गळी मे धायती री खडग लगावै । इया करता-करता श्रर फिरता फिरता एक घर मे धायली रामू र श्रारया दीठ चढी । दोनू च्यार निजरा हुया । दोनू ही एक बीजलै देख'र हरकण लागा पण इण रा किणी न जामनी लाग जाव जद पण वा श्रंडा मनोवरीनै लकोई राखी ।

ली रामू कान भरवा मीट सू देख्यो अर नापाछ आपरै अतस
ड़िनै जगावण सारू घणां री आगळया सू जमी कुचरणनै
गी।

इण सन सू रामू जाणग्यो कै धायलो अठै कितरी उणमणी
धायलीन आप री भेद बतावण अर आवण री जुगत जतावण
रामू गीत उधेरयो —

मेरी राम धायली, उतराधै कूव पर मेरो डेरो ए।
धागिय में नीपजै अर मूगियै रे मान
दिन बदिया रै साथ में तू, दे मिया री छान

ायनी विरग वेश में रामू कनै कोकर जाव?
ाळेन मे पूछ्यो

कठ है घाघरियो कठै धावळियो कठै है चुडलै रो जोग
काळी खु खणत्या पैरघा म्हानै
हसै रै गावा रा लोग
मेरी राम धायली ——

काम्ब दबाय'र लायो धाबळियो
घाघरियो म्हारै हाथ
ऊचड चू चड मोवड पैरया
चुडलो हाथी दात
मेरी राम धायली —

तू मत जाणी काळ पड्यो है
गैरा घणी समामी
धोरा धापा घरे मोकळा
गावै गीत दमामी

मेरी रामधायली———

काकड बोर मतीरा पाक्या

पाक्या टींडस बैंर

जाळ आळा खेत पाक्यो

सुरगो बीकानेर

मेरी रामधायली –

रामू गीत गे सैन सू आपरै प्रदेश री माली हालत रो ब्यो बता दियो क "धायली, आ नी जाणै क मुरधर तो काळा कुटीज्योडो रैव ।" रामू समझायो कै हे धायली, गाव सू उतरा कूवो है उठै मेरो आसण है मतलब कै मै उठ तनै उडीकतो रह मिन सू तू दिन बदे-सो मियरी छानडी मे मुगीयमान वास्तै चिणागदरी नाख देयी छान जगणन रागसी जणा मिया तो उण बुझावण मे लाग जासी अर जद तु मौको देख'र मेरे उतराध कूवै माथै दौडकर आज्याई ।

रामू कैयो–'तू आ ना सोची कै थार सारू धायरि धावळियो कठ सू आसो, मैं तो काळी खू खणती पैरधा हूं इण देख' र रस्तै रै गावा रा लोग हससो कै इणन कठै सू उठा ला पण मैं सब चीजा साथ लेयर आयो हू । हाथी दात रो मुठियो म ऊची नोक री मोचडी पण साथै लायो हू ।

तू आ ना सोची कै आपा रै मुलक मैं सैलोग काळ कुसमी पण अयर्व समामो तकडो है। रोही मे साग तरकारी सा टीडसो काकडिया अर मतीरडो मिलणनै लागगो है । कातीसर (बनफल) जबरो है ।

इसके बीकानेर री धरती बडो सुरगी है। आपा रो जा

ळो सेत पक्काण पर ग्रायो खडो है। घर मे गाय व्यायोडी है।
य, छाछ री ताई कमी नी है।

तू मेरी बतायोडी जुगती बैठा'र मेरे कनै दे ठोका'र ग्राज्या
पा ग्रडा घूपाडं चालसा क भिया रा बाप भी आपा नै नावड
सक।

रामू री एक-एक बात घायलो रै रू रू मे जमगी। उणरै
य-जियै मे ऊजळै धोरा री चितार जामी ग्रर जाग्यो सनेपी
हेज।

घायलो रामू रै बतायै मुजब खूटकलो करयो ग्रर ग्राख
क नितरी ताळ मे जा साकडो करयो उतराधो कूवो ग्रर
पाछै रामू ग्रर घायलो दिया तेतीसा कै जाये बूचकी तीखा
न। जणा ही किणी सायर कैयो है कै नट विद्या सू जट बुद्धि
तोलो पडै।

भाळू भी गजब री भाळू है। नौकरी री भाळ मे सर समुदा दफ्तर छाण राख्या। नौकरी लागणो नीं लागणो भा ग मारै नही पण नौकरी री भाळ मे भाळू तिल जितरी भी कर पडण नही दी।

भाळू नै आज ठा लागी कै आपार इण सैर मे रेडियो स्टेस चालू हुवण आळो है। उण सोच्यौ "उठै थोर भाळ कर र वदास नौकरी री बिध लाग जाव तो"।

भाळू किणी जाणकार आदमी कनै सू अरजी लिखाय क– मनै आपर अठ गावण-बजावण सारू राख लियो जाव" भाळू दफतर मे जाय'र आ प्राथना पत्र पेस कर दियौ अर लोगानै, वारै बैठया देख'र आप पण उणा कनै बार बैठग्यो।

इण दफतर रा मोटा साब दूज अफसरा करता घणा आछ बखतो-बखत काम पर आवणो अर ईमानदारी सू आप रो दा निभावणा। अैडा अफसर हावा ठापता लाव।

[साब दफतर मे आवता ही उमेदवारा री अरज्या री जोवणनै लागग्या। साब नैं रेडियो स्टेसण' माथ काम करणि साजि‍न्दा री घणो पण जरूरत ही, इण वास्त साब इण काम स इन्टरव्यू लेवणो चावता हा कै जिका अठै रै प्रोग्रामा मे सा वजाय सक। भाळू री अरजी अक साजिन्दे री अरजी ही, जि

सू साव री निगै उण ऊपर सगळा सू पैली पडी ।]

साव श्ररजी देख'र [श्रापो श्राप] 'यह 'प्रार्थना पत्र' किसका है ? श्रर वा सरसरी निजर म् पढ परा र] टन टन घंटी बजाई । घंटी री श्रवाज सुण'र चपडासी श्रायो ।

चपडासी [हाथ जोडतो थको] 'हुकम सर !'

साव 'श्ररे, देखो तो! यह एक प्रत्याशी है, -- नाम के जरा उसे भिजवादो !'

चपडासी 'यस सर !' [कैय परी'र कमरै री चिका नै चोर'र बार श्रायो श्रर प्राथान हेलो पाड्यो । हेलो सुण'र भाळू चपडासी सामै श्राय ऊभो हुयो श्रर श्रापनै ईज हेलो मार'र बुलावणियो बतायो । जणा चपडासी प्रत्यासी भाळू न चिक कडखै कर परी'र साब रै कमरै में वाड दीन्यो ।

साव [प्रत्याशी नै देख'र] क्या नाम है तुम्हारा?'

भाळू 'म्हारो नौव तो भाळू है सा ।'

साव 'भाळू ?'

भाळू 'म्हे सा !'

साव इस दरख्वास्त पर तो भाळू नाम नही है । [प्राथना-पत्र दिखा र]

क्यो, यही है न तुम्हारी दरख्वास्त ?'

भाळू 'म्है सा ! है ता श्रा हो ज ।'

साब 'फिर यह नाम–भेद कसे ?'

भाळू 'इण मे नाव-भेद कायरो है सा म्हारो बोलतो नाव तो श्रो हीज है, जलम रौ नाव खाली गोपाल किसन है ।'

साव 'हमे जलम श्रोर मरण से कुछ मतलब नही, जो

तुम्हारा असली नाम हो, वही बोलो ।'

भाळू म्है सा' ! वो हीज नाव बोल सू ।'

साब हा तो तुम्हारा असलो नाम कौन–सा है ?'

भाळू 'म्हारै देखणै मे तो सैंग नाव असलो होज ह, आपन जिका–जिका म्हारा नाव नकली लागै, छोड देया ।'

साब 'तुम्हारे सभी नाम असली हैं ?'

भाळू 'हा सा, म्हारी जाण मे तो स' ही नाम असली हैं ?'

साब तुम्हारे और कौन-कौन से नाम है, जरा बताओ तो?'

भाळू 'हा, ल्यो सुणो सा !'

साब बोलो !'

भाळू आपरै नावा रो इतिहास बतावतो थको आप रा न्यारा–न्यारा नाव बतावै है —'म्हारी मा रै टाबर को जीवता नी जणा घर आळा म्हारो नाव फूसियो' कढायो । म्हारली भूवा र पण 'लाधियो, नाव जच्यो । वा म्हनै 'लाधियो' कंवण ढूकगी । नानाणै आळा र 'कचरियो' नाव दाय आयो जणा पण व 'कचरियो–कचरियो' कै र हेलो मारण न लागग्या । पण म्हारली वैन रै 'कोभियो' नाव राखण रो जची अर पडोस्या म्हन 'कुरडियो' नाव कैय नै हेलो पाड्यो । किणी मनै 'मगतियो' कयो । चौक आळा म्हारो नाव 'भाळू' रखायो । चौक आळा रो क'वणो है क तू आछो-मदी री भाळ राखण आळो है जद ही ज तेरो नाव भाळू है । वा रा कवणो है क तन इणो नाव सू नौकरी मिलण मे मदद मिलसी ।' भाळू आग बोलतै कैयो अब आप कै'वो जिको नाव पक्को कर'र राख लेवा ।'

साब । 'तो क्या तुम्हे गोपालकिसन कोई नही कहता ?'

भाळ् कें'वें सा ! पण खाली म्हारो मा हो ज कदे कदास मन गोपालकिसन कैवें ।'

साव बस ! तुम्हार इतने ही नाम है या और भी नाम है?

भाळ् 'हैण ताई तो म्हारा इतरा हीज नाव है,आगे जे आप कोई नाव राखस्यो, जिको जचाय लेस्या ।'

साव तो क्या, रोज-रोज नाम बदले जाते है ?'[

भाळ् बदळण आळो चायें सा, नाव बदळनें मे किसी रकम लागे ? म्हारा अे नाव बोलता भाव तो है म्हारें चौक आळे दूजा छोरा रा नाव तो इसा है के बीजी जागा जोया ही को लाधे नी!'

साव [विनोद भाव म] ऐसे दो-चार नाम तो देखे !'

भाळ् [मोळप री चादर ओढ'र] 'अे ! रीडियो मीडको, धु'गजियो, फर्डादयो, गोडियो गुड नें काकडियें री पतळी फाडी !'

साव 'ये आदमियो के नाम है ?'

भाळ् [डोढ मे] 'नातर के डागरा रा नाव है सा!'

साव अच्छे नाम हैं भी तुम्हारे और तुम्हारे चौक वालो के !'

भाळ् इणमे अचू भे आळी काई बात हुई सा मै तो पण बोलता अर ओपता नाव है,बीजा छोरा रा नाव तऊदरियो,कूकरियो अर मीगणो छाणा जिसा तकायत नाठ कढायोडा हैं।'

साव चलो हम तुम्ह रा नाम गोपालकिसन ही मान लेते है ।'

भाळ् , नी सा ! इतरा दोरा हु'यर क्यू मानो,आप रो ऊदरो-इ दरो राजी हुवें जिको नाव मानो, आपरें जे हाडोहाड गोपाल-किसन ही जचग्यो हुवें तो भाव गोपालकिसन ही ज राख लेवो, म्हारे तो किसें ही नाव रो अडकास कोनी !'

साब हमे तो तुम्हारा नाम गोपालकिसन ही पसद आया है और यही तुम्हारा असली नाम है भी । तुम्हारी दरख्वास्त पर भी यही नाम लिखा है ।'

भाळू 'आपर औ नाम जचग्यो तो सगळा सू हो ज सावळ! गोपालकिसन नाव राखण मे कावळ काई सा ?'

साब 'अच्छा तो गोपालकिसन ! इससे पहले भी तुमने कहीं नौकरी की है ?'

भाळू ना सा, नौकरी चाकरी पला तो म्है कठैई कोनी करी सा पण कई जागा नौकरी री पण भाळ जरुर करी है जिकी री आपर अठ आवता नाको पोयो है ।'

साब 'अभी तय कहा हुआ है ? अभी तो तुम्हारा इन्टरव्यू ले रहे है, तुम यदि पास हुए तो नौकरी भी पा जाओगे ।'

भाळू [पास रो वास्तविक भाव नही जाण र] में तो सा आपरै पास होज रंय सू , आपनै छोड र कठ जाऊ ही कोय नी ।'

साब पास से मेरा मतलब है यदि तुम इन्टरव्यू मे निकल गए तो !'

भाळू [भळै भी साब रै कवण री मतलब नी समझ र] मैं तो निकाळयो ही ज कोनी नीकळू सा !

साब नौकरी तो तभी मिलेगी जब तुम योग्य सिद्ध होगे !'

भाळू 'तो क नौकरी जोगी अर सिद्धा ['जोगी' अर 'सिद्ध' अेक जाति विशेष] नै होज मिल ?'

साब 'हा-हा, नौकरी वही पाता है जो लायक होता है।' साब आगै बोल र कंयो-'अच्छा अब यह बताओ तुम्ह कौन-कौन मे साज बजाने आते है क्या, तबला बजाना आता ?'

भाळ॰ ना सा !
साब सारंगी ?
भाळ॰ ना सा !
साब हारमोनियम ?
भाळ॰ ना सा !
साब तो क्या वेला आता है ?
भाळ॰ ना सा ! वेलो तो बजावणो कोनी आवै ।
साब ढोलक आती है ?
भाळ॰ ढोलक रो काई आवै सा !
साब तो क्या, लावणी-दूहो पर देशी ढग पर नगाडा-गाडी बजाते हो ?
भाळ॰ नगारा-नगारी बजावण गे के काम पडै हो सा !
साब तो क्या तानपुरा आता है ?
भाळ॰ तानपुरै री तो खाली नावहीज सुण्यो है सा बजा-णो पण मनै जाबक ही आवै कोयनी सा !
साब तब तुम्हे क्या बजाना आता है ?
भाळ॰ आवै तो है सा !
साब अच्छा, तुम्हे फूंक के बाजे बासुरी अथवा इसी टेगिरी के दूसरे बाजे आते होगे ?
भाळ॰ ना सा, फूक तो खाली चूल्है मे हीज देवणी आवै या अकडोडिया रा 'फूकला' उडाया करें जणा फूक दिया करा ।
साब तो फिर बताओ कि तुम्हे क्या बजाना आता है ।
भाळ॰ सा एक तो मनै चूडोबाजो अर बीजो रेडियो बजा-णो आवै ।

साब . [हस'र] बस, यही आता है कि कुछ और भी आता है ?

भाळू और तो सा काला वजावणी आवै का सावण र महीनै मे स्यादाले मे गाल बजाया करा अर का कठैई ग्रामसभा मे जावा तो नेतावा रै भासण मे ताळी वजाया करा।

साब [क्षोभ अर आश्चय मैं आ'र] तव क्यो बेकार मे इतनी देर तक हमारा माथा ग्याया।

भाळू में वामण हू सा, मैं किण रा माथा खाऊ, मैं तो रोटी भी मुसकल सू ग्रेक दिन मे ग्रे करगी हीज खाऊ।

साब क्यो, रोटी ग्रेक वार ही क्यो दिन मे दो वार ही खाया करो।

साब . [मन मे ग्रेड कमाऊ प्रत्याशी रो डौळ जाण'र-कैयो] तुम गोपाल किसन इन्ठरव्यू में फैल हो गये, अब तुम जा सकते हो।'

भालू सा ! आजकाल फैल हूया करै जिका रेल तळै कट'र मरया करे मन काई करणो चाहिजे' ?

साब तुम घर जाकर आराम करो, खू टी तान कर सोओ।

लाखीणी

बात री खरी अर सुभाव सूं करडी बरजो भूवा आखै बास मे आपरै नाव सूं ओळखीजै । इसो आदमी सायत ही काई हुवै, जिको बरजो भूवा रै थोडो–घणो लबटधकै नी वाज्यो हुवै। लुगाया गे ही-ही कर हसणो, अर मोटयारा रो खी-खी कर दात काढणो भूवा नै अछगै-आतरै ही को सुवावतोनी। अंडै ही किणी कारण सूं वा जद–कद ही बात टोकती तो उणा रै मूंढै मूं बासतै सो बरसतो। भूवा रो सामनो करै इती हिम्मत कोई री ही को ही नी। पण, आ ही बरजो भूवा जद बास रै टाबरा न धमाचौकडी मचावता देखती तो ना तो बा मैं बरजती ही अर ना बा पर भूजती ही, उल्टै रो राजी मन सूं बा री बाल लीलीनै निरखती रवती। एक बडो गुण जिको बरजी भूवा मे हो बो आ कै बा भला ही घर रै गोरख धन्धै मे उळझी हुवो भला ही न्हालो वठी–राम रो नाव लेवती रेवती। इण कारण बा रो पोपलो मूंढो पालो चरती बकरडी रो सो हरदम हालतो ही रैवतो।

आज तो बरजी भूवा रै च'रै माथै सौ-सौ सळा पडी दीसै आग्या खासी भली माय बैठगी है, उणा रै माथ रा केस बुगलै री पाख्या सा धोळा-धप्प हूयग्या हैं अर हाथा पगा री चामडी

मरचोड़ै साप रो सी लागण लागगी है। अवतो वा चालतो फिरतो ग्रं डी लाग जिया कोई गम्योडी सूईनैं सावळसर जोवती हुवै। पण, जुवानी-गाळै ग्रा ही सागण वरजी भूवा चालती जद घोडावण सी लागती। मुठिया काचर सी ग्राग्या गिगनार चढ योडै चाद सो मु ढो ग्रर कावलो नाल्योड नाग सो पळपळाट कर काळा भवर केस- सौरभ सू भरचो इण री भो सरूप ग्रापरी जात रो ग्रेकलो हो हो। ग्राज बा बात कोयनी। ग्रा तो सगली बीत्योड समय री बात है। समै कोई रैं नाळियै रै बध'र को रव नी। वो तो ढळती छावली री तरियां भेळो हुय'र सरकता ताळ ही को लगावैनी। बखत रा बाजा ग्रापर ढग सू बाजता ही रैं'व कुदरत रै इण खेलन कुण रोक सक ग्रर कैरी हिम्मत है के जिण र रोंक्यो ग्रा रुकै।

एक दिन वो हो हो जद वरजी भूवा ढोला रैं ढमक पर-णीज्या ग्रर पातळियै ग्रर लळवळियै राइवर रैं साग इणा रो गठ जोडो जुड्यो। मा-वाप जिया किया ही ग्राप री लाडकवर नैं धोरिये चढाई। बाप ग्राप री पोच रै परवाण जायर दैन दायज्यो दियो भळ ही मन मे पोमिजग्रा कायनी। नरमाई सू लोगा सामी ग्रा ही कही क"फल ही जाग्या फामडी कर'र डोळिय सारू बायली रा हाथ पीळा कर दिया- सगळी सावरिय री किरपा है।" इया हीं वरजी रैं मुसर ही ग्रापरी कुळवहुन छाजलो ग्रक पीळियो (सोनो) घा यो ग्रर सेरावद चादी रा ठाव चढाया पण गिनार वण ही को करीनो। कैवण रो मतलब कै ढोला रै ढमकैं, हरख-कोडै वरजी भूवा ग्रापर सासर गया। पण, समैं रो वायरो ग्रडो चाल्यो जिकैं ग्रा सगळी वाता ग्रर सैन मगळ-भावना नें साव सू पो

कर'र नाख दी। जकी वरजी भूवा, सोनैली पवरी ओढ'र रातैं हाथा परणे फेरा सासर गई ही वा हीज पाछी आवती वेळा काळो ओढ'र आई। परणीज्योडो मोटा–मोट आठ पौ'र ही जियो। पेट दूख्यो, नहाछ खा'र आगण मे पड्यो अर वो पड्यो रो पड्यो हीज रैग्यो हाथा वासण छटग्यो। कोई कारी को लागी नी।

बरजानै बाप, आपर काळजै र लगायली। बरजा टाबर थका सू हीज स्याणी हो अर मा बाप रै धणी लाडेसर हो पण अठै आय'र तो वै ही एकरसी कमजोर पडग्या। फेर जाडा भीच जिया किंवा ओ दुख झलण सारू आपारी छाती माथै मोटी सी चिमाळ राखली। काया किणी री अमर नी हुवै। बखत आया सगळानै ही जावणो पडै–एक टैम इसी ही आई कै बरजी रा मा-बाप भी पाक पान दाई एक दिन झडग्या। बरजी रै जोध-जवान हुवण सू पैला ही उण रा ओ आसरो भी छूटग्यो। पण उपाय काई हुव। काळनै कुण ढाब सकै ? रोया सू जे की सजतो हूतो तो बरजी न्हार कूर्क ज्यू कूकन लाग जावती पण वा जाणती ही क बीती न बिसारण' मे ही भलैपो है।

बरजी हिम्मत को हारिनी। आपरै कडूम्बे रै काका, दादा अर भाया रै सायरै खेती री रुत मे दो हळिया बुवाय लेवती अर एक गाय–पाच सेर धार रो दूधारू, बारू मास आप रै मन ही राखती। आप रै घरियै मे रोटी-पाणी करणै रै बाद वा आपरै बाव रै घरै जाय रातनै सोवती। निकमाळै री रुत मे जे कठई गाव मे कथा–बारता, सत्सगत हुवती तो बा आपरी काकी-बडियानै सागै लेर'र सुणणनै जावती। राम-राम कर'र आप रो बिखै रो बखत किया ही पूरो करणो, खाली इतो ही बरजी रो अगे

ज्योडो हो ।

आज री तो खैर वात ही छोडो, पण एक दिन वो ही हो जद बरजी आपरै मायकर सौ-सौ तीर कवाण निसरता भेल्या पण किमो घोडो घास खाज्यावै। लखदाद है बरजीन जको, आज रै ई भडै जमानेनैं माथैं झाल्यो, आपरो पग को आखडण दियो नी। कैव'न मैं कैयो है 'बडो बडा मे नोसरी तातो तवरी बाळ' पण आ वात भी तो कवत मे हो कैयीजैं है— 'सिखरै पहुचता सूरा खोल खिडक बकलाळ।' बरजी सिखर पौचेण आळी मूरवी नारी हो। जोगण भर पापा सू आनरै रैवण आळी बिजोगण।

बरजी भूवा जद कद वात चाल जणा कैया करै कै 'कोई रंडापो काढ तो म्हारै जिया काढो नातर बांळ विधवान आप रो पाछो घरवसावणो पाप कोयनी। पाप तो ओल-ओलै पाप नैं पाळन मे है।"

बरजी भूवा आप रै आत्म विश्वास मे आज भी कैया कर- "आ वेठी बरजी जीवती जागता। फाको मार नावळ रस्त घालण आळा री जद भी कमी को ही नी पण बरजी किसी री धाको मे आई? वण ही कयो तो चडूड पडूत्तर दियो क म्रै काम थान हो छाजै। वरजी पराय पुरस रे को नधनी, को बधनी जिको तो को ही वध।"

बरजी भूवा रो कैवणो है क जद म्हे म्हारो रंडापो साबळकर काड सकू तो दूजै मिनखा नै म्हारै जीवण मे हक्षप करण रा काई इधकार है। जे कोई वदवोई सिडाव

णा तो केठा'क ग्रेडी सत्ता देवणी भी ग्राछी पण जद कोई
ोरा बण'र जहर झाल तो फठै कोई दयू पाल ? लोगा री
ोच्योड़ी बाता सगळी ही सारुळ टूवै, भ्रा बात बरजी भूग
ा मानैतो ।"

ग्राज ग्राखै गाव मे बरजो भूवा हिमताळ, ग्रर लाखोणी
ुगाई गिणीजे । ग्राठ बरस साठ बरसा रै बखतनै जिणी जे
ानखै सू वाळाया है तो वा नाम बरजो भूवा है – ग्रर फकत
रजो भूवा रो ही है

लकड्या रो लादो

पूरियो ऊग-सुवारणी लकड्या रो लादो सहर लेय जाव अर सहसा- दाम बट लावै । दूजा, लाद आळा, जे पाज रिपिया वट ता पूरियो दस । जे कदास दस नी वटै तो साढी सात रिपिया में तो कसर पड़ण हीज को देवै नी ।

पूरियो सदा आळी दाई आज भी सदर मे लादो वेचणन आयो । लादै सू लद्‌घोड ऊठनै सागी जागा लाय खड्यो करयो । थोड़ो ताळ पछै एक लेवाळ आयो अर पूरियनै पूछ्यो लाद र के मोन ?"

"थे ही क्यदचो ।" पूरियो लारै सू धोतियो झड़का'र ऊभो हुवते कयो ।

"घन थारो है तू ही कय ! " लेवाळ बोल्यो, "के दाम नेसी ?"

पूरियो बोल्यो, ' मोलाई करू का एक ही दाम कय देवू ?'

लेवाळ 'एक हीज दाम कैय, म्हार भोमै पडसी ता लेय नेसू , नही 'थारो घन थार कनै है ।"

' लादै रो मोल पैली यको साढी सात रिपिया धम्योड़ो है ।" पूरियै कयो, "अबै थे देवो जिका दाम कैय देवो । "

लेवाळ बोल्यो, "साढी सात घणा है ।"

पूरियो—'मैं तो थानै लादै रो घामणी हुई जिकी बताई है ।'

'ग्रा दामा मे तो, जिके धाम्या है, वो हीज लेसी । हू तो रिपिया पाच रोकडी देसू । "लेवाळ कैयो, "नाखणो है तो ग्रावगे ।'

पूरियो वेचवाळी र साद मे वोल्या, "इ या ना करो, सूल जचा'र कैवो, लादो सातरो है ।" पूरियो ग्रागे बोल्यो, 'लकडी नू वो ग्रर साव सूकी हैं, लादा लेय जावो, चूको मत ।"

लेवाळ पाछो वाल्यो, "लेय जावा क्यू कर ।-दाम-तू सावळ-सर नय [लेजावणो तो है ही, पण मोल–तोल सावळ वठया नय जावा'क ।"

'मैं तो कैयोनी क साढी सात रिपिया धम्योडा है, पण उठै लादो डागळै पर नाखणो पडतो जद पण मैं उण रै नाख्यो कोनी । वीजा, मोल तो ग्रो हीज धम्यो हो ।" पूरियो सोदो पटावतो बोल्यो ।

लेवाळ पाछो घिरतो बोल्यो, "म्हारै तो को डागळै पर नाखणो पड नो ग्रर न तिपडतै ही । घणी ही सोरी जागा है, गु भारियै मे नाखणा है । मारग पर खोल्यो ग्रर माय नाख्यो ।"

ग्रा तो सावळ है कै लादो सबकी जागा नाखणो पडसी पण ये दामा मे घणा हेठा वोलो होनी । "पूरियो बोल्यो, "कई सूल-सर कवो तो लादो नाखू वरो ।"

लेवाळ पाछो कैयो देखलै भाई ! थारै पोसावै तो नाख नीतर घडी–खण ग्रोर तप लै । सागोडो भाखतो हुया नाख देई । ग्रापा रै तो को मोडो हुवैनी । नाखणो हुव तो जद थारी दाय ग्रावै, हेलो पाड लेई । वो सामलो बारणो म्हारे घर रो है ।"

पूरियो—"जरणा की सावळ दाम कैवो।"

लेवाळ—"मैं तो सावळ हीज कैया है।"

पूरियो 'कैया तो है, पण लकड्या घणी है।

घणी कितरी ?" लेवाळ पूछ्यो।

'लादो पूरो साढो सात मण रो है। पूरियै उथळो दियो।

लेवाळ—"देख लै भाई! घणी-थोडी करमा री।"'

पूरियो केई ताळ सोच'र लेवाळनै कैयो,'थे चालो, हू देखाणी निगै करलू नही स थार नाखणो है हीज।"

'कर लै! चोखी तरा निग करल! कठै ही जे बत्ता दाम वटै तो बट लेई लेवाळ बोल्यो,"पाच मे नाखणो हुवै तो आपा र आय जाई।"

"ठीक!"कैय र पूरियो उण जागा सू चाल'र सहर र गोरवै-सी आयो अर ऊठनै जेखाय'र उण एक लादै रा दो लादा करया। एक तो उण जागा ही राख दियो अर दूजोडो पोलो-डोला बाध'र लेवाळ रै घरै आयग्यो। पूरियै उणन हेलो करयो 'लो नखायलो लादो। कठै नाखणो है ?"

हेलो सुण'र माय सू एक मिनख कयो, आयग्यो के ?

"हा!" पूरियो बोल्यो,'जागा बतावणनै टाबरनै ही मेल देवो, वो बैसी बठै हीज नाख देसू।"

लेवाळ बोल्यो, 'आवा हा।"

"ये भाव मठै आवण री तक्वील (तक्लीफ) मत करया नी भलाई।" पूरियै कैयो, ' घर रो हीज बात है। टाबर वसो जठै ही लादो उचाय र नाख देसू।"

लेवाल—"म्हारै घर मे तो हू हीज टाबर हू अर हू हीज बडेरो।" आ कैय र लेवाळ बारै नीसरयो अर लादरै घार मेर

गरणेटिया काटरणनै लाग्यो । उण रै चेहरै माथै इसा भाव तिरणनै लागग्या जाणै वो पूरियै री चालबाजीन साव ओळखली हुवै । छेकड लेवाळ सू ढो खोल'र कयो— 'लादै मे तै लकडी कितरी बताई ही ?"

"व वित्ती हीज !" पूरियै कैयो।

'वै वित्तो कित्ती हीज ?" लेवाळ पूछयो।

"वै वित्तो हीज, जित्ती पैला बताई ही !" पूरियै रों भळै पण ओ हीज कवणो हो ।'

लेवाळ—खाली पूछू हू , कितरो वजन बतायो हो तै लादै मे?"

पूरियो बातनै वोटतो बोल्यो 'बतायी जिको किसी थानै चेतै का नी ? क्यू मोळा बणो हो ?"

लेवाळ—उण वखत तो के जाणा तै लादै रो वजन साढी सात मण बतायो हो ?

"हा, साढी सात मण ही हो"—पूरियो बोल्यो—"अब घणी जेज मत करो, तावडियो चढै, गाव जावणो है। ऊठ भूखो है। लादो वेगो नखावो।" पूरियो ताकड करतो बोल्यो जाणै मू कर ही सोदो पट ।

लेवाळ पूछना रै सुर मे बोल्यो, "लादै रो काटै पर वजन कराय लेवा ,'

पूरियो-"पण थे तो मुकातै नखावण री बात करी हीनी !"

"करी तो ही पण !" -लेवाळ कैयो-"चाल-चाल लाभू माळी रै काट पर लादै रो वजन करा लेवा ।"

पूरियो कई काठो-काठो हुयो पण लेवाळ ऊ ठ री मोरी झाल'र काटै कानी चाल बहीर हुयो । ●

बेटैं सुधी बहू

आज अेवाळिया रो सुस्तावौ जोगीर तळाव माथै हो। अठ उणमे सूं कोई तबले मे खीर राघतौ हो, कोई भोभरिया सेवतौ हा। अेक जणो आप री मोज मे अलगोजै माथै टर काढतौ हो अर अेक अेवाळियौ सिराणै भाखलो देय'र आप री कमर पाधरी करतो हो। खाजरु जाटचा तळै सुस्ताय रैयो हो। कदेई सो किणी धेटिये री नस हिलण सूं टाली टणमणा ऊठती 'अेक अेवाळिय री निजर अचाणचक री आथूणै पासै ढळतै सूरज कानी गई। उणनै उठीनै सूं कोई आवतो दीसियो। वौ बीजोड़ै साथ्या घक मूंडो कर'र कैयो, अरे आथूण कानी सूं आ क बलाय आव है? किरडकाबरी–सी।"

बीजोड़ै अेवळियै पण उठीन देख'र क्यो 'हा पण आ क जिनावर है। पैला तौ कदेई इसो जिनावर इण रोही मे देखण मे नी आयौ।"

तीजोड़ै आप री नसनै ऊंची करतै, देख'र कैयौ, 'नै'च हो आं तौ भाई, कोई ओपरौ जीव लाग्यौ मान तो।"

चौथै पण देख'र कैयो, सगळा सठा ग्या, इसो नी हुव क ओ कळह्'र मायनै पड जावै।

लरडिया री निगै राखज्यो, आ नी हुव ओ उठार ले जाव अर आपा वाई रो–सो मूंडो किया देखता ही रैय जावा। गैडी

सगळा आपरै हाथ बसु राखज्यो घणी करै तो कडतू मे मचका दीज्यो ।

इण विरतातनै देख'र सगळा ही अवाळियां भचदेणी सी ऊभा हुयग्या । सारा ही उण जिनावर कानी सावचेती सू टोर लगाय ली।

अेक जणो बोल्यो "टागा तो इण रै दो हीज है ।"

दूजी अेवालियो कयो "हाथ ही दा हीज है।"

तीजोडो बोल्यो "लाग ता ओ मिनख जडो है ।"

चोथोडै कैयो "ओ तो कोई डोलबेडोलो है ।"

अेवाळिया इण तर बात करता हीज हा कै इत्त मे गेलारथू अेवाळिया कनै आयनै ऊभो हुयो । वो अवाळिया सू हाथ जोड रामा-सामा करी पण अेवाळिया चुपचाप थभा ज्यू राडा ही रैया ।

पहो चात्रक मिनख हो, वो जाणग्यो क 'अै बापडा, राम-राम रै पडत्तर सार क जाणै ? पहो अेवाळियान चला'र भळै पूछियौ क्यू भाई ! धकलो गाव कित्तो'क अळगो है ? मैं झालर बजते-सी स्यात सठ पूग जाऊला ?'

पण अेवालिया तो गेलारथू री बात नै काना हैठै मारग्या । न तो मू डो खोल'र की कयो हीज नी। पहो जाणग्यो कै अै तो बोकानद है। वो भळै कयो "वीरा ! बोल्यो तो खरी, इया काई सतरा-वैतरा हुयग्या हा । मैं ही मिनख हीज हू ।'

अेवाळिया अबै जावता बोलिया ' तू मिनख, किसो है ? जे तू मिनख है तो थार अो अंडो मे ओडघोडो है ? त थो ओळ-पिनोळी साग क्यू बणा राख्यो है ?'

बटाऊ बोलियो "आ तो म्हारै 'राम–नामी' नाव री चादर ओढयोडी है। इणनै देख'र थे कोई कावळ धारणा मत बणाय लीजो, बामण अर के साधु, अ डो चादर ओढिया करै है।'

इण वात पछ अंवाळिया रो घोजो वधियो क 'ओ पक्कायत होज आपा जेंडो मिनख है, दो हाथ अर दो पगा आलो।'

अंवाळिया बटाऊ रो थो-मो लेवण सारू पूछियो तू कुण बाज है?'

पछा कैयो मैं बाजू हू रामनेमी।'

अंवाळिया अचू भो करतासो'क पूछियो 'रामनेमी कुण हुवै अर वो काई करै?"

रामनेमी जाणग्यो क अंवाळिया साथ 'सोळा मूठी खळवळा हुवै। वो आगै बोल'र कयो 'भाई रामनेमी म्यानी मिनख हुवै अर वो नी हुवै जिणरो ब्याव करा देवै।'

अर तो अंवाळिया अचभोज र बोलिया 'ब्याव करा देव। जद तो तू भी सायत ब्याव करा देवतो हुवेला।'

रामनेमी हा भरतै कैयो 'इणमे काई फरक है, मैं ब्याव पछ वयू नी करा देऊ, बिला जरुर मै करा देऊ।'

[आ वात कोई सू छानी नी है कैं अंवाळिया रो ब्याव बडो दोरो हुवै वयू कें अंवाळियो फकत लरडी चरावण रै भलावा और की नी जाणै। वो तो जगळ रो राजा हुव घर गिरस्तो रो सारन वो काई जाण? जद पण घणकरा अंवाळिया कवारा होज रवै, ब्याव खातर तरसता होज रेंव।]

अंवाळिया नै रामनेमी जद आ वात कयो कै 'मैं ब्याव करा देऊ' तो वात वारै वास्तै घणी सुवावती ही।

रामनेमी नैं ग्रेक ग्रेवाळियौ कैयौ क "म्हारै ई खंडतियै री ब्याव करा दै, देखा !"

रामनेमी कयौ "हां, करा देऊ, पण ब्याव मे रिपिया ग्रेक जेट नैडा लागै जका तौ लागेला इज दूजौ ब्याव करावणौ म्हारै सारू ग्रायौ। ब्याव पकायत इज व्है जाई।"

रिपिया री बात सुणता ई ग्रेवाळिया ग्रापरै पावर माय सू काढ'र रिपिया री ढिगलौ कर दी ग्रर कैयौ 'लै, ग्रै रिपिया पण ब्याव व्हेण मे ग्रब जेज नीं लागणी चाइजै।'

रामनेमी ब्याव करावण रौ पक्कौ हुंकारौ भर'र रिपिया री गाड बाध लो ग्रर पछै पाड नैं ऊचा'र बठ सू 'चाल बूच की तीखा कान' व्हेग्यौ।

इण बात नैं कोई तीन--च्यार बरस बीत गया। रामनेमी मुफत रौ माल जाण'र रिपिया रौ सागीडौ गफौ किया ग्रर मन मे मणू तौ ई राजी व्हियौ। तीन-च्यार बरसा रै ग्रातरै सू रामनेमी ग्रोजू इणी मारग वैवतौ वा ई ग्रेवाळिया न भळै क्यू टकरा जावै नी। रामनेमी देखियौ 'ग्रबै किमा वै ग्रेवाळिया ग्रठ मिळै है ?' उण ग्रावात कदमकाळ ई नो सोची ही कै वै हीज ग्रेवाळिया उणनै भळै इणी मारग माथै मिळ जावला, पण जोग री बात कै वै उणनै ग्रठै मिळ हीज गिया।

ग्रेवाळिया रामनेमीन देखता पाण उण'रा कोड किया ग्रर करण लाग्या क 'ग्ररे, रामनेमी ग्रायग्यौ रै, रामनेमी ग्रायग्यौ।' ग्रेवाळिया रामनेमी रै च्यारू मेर कडौ जोड'र बैठग्य ग्रर उणनै बूझना करी क 'रामनेमी ! तू कैवतौ हो नी कै खंडतियै री ब्याव करवा देऊला रिपिया देवणा म्हारै सारै हा पण वो ब्याव कठै ?'

रामनेमी छटियोडी रकम अर अतकर हुसियार, वा कयो 'ब्याव तो जद करा दियो हो। अबै तो खडतियै र छोरा भी व्हय गियौ। खडतियौ म्हांरै साथै चाल र आपरो वहूनै लेय'र वयू ना आवै। बापडो बाप र घरे खारसौ करे। म्हन ता ले-दे ओळ वा मिळै उणर बाप रौ क, "खडतोजी म्हारो वेटी ने अजताई लेवण नै कोनी आया। सो भाई, म्हारै साथ चाल र थारी बहू-टाबरा न लेय'र आवै।"

रामनेमी'रै कैणै सू खडतियौ आपरै जोखेड माथ चढनै आळो पितळियौ पलाण माड'र रामनेमी साथ सासर न व्हीर व्हेग्यौ। अं वड दूजे नै समळायो।

रामनेमी र वडी माज हाथ लागी। जठै उणन खुरडा रगडन ऊपाळो चाल'र आपर गाव जावणा पडतो। उठै अब वो लचपच लोचा-चालतै पागळ माथै ड ग्का सू लरका नेवता जावे हो।

रामनेमी खडतिया न रस्ता मे समभायौ क "सासर म जवाई साथै लोग केई तर री रोळ मसखरी करिया करै पण तू सेठौ रहिजे। केई-केई गावा म तो जवाई न लटकावण रो ही रीत है। वै आ देखणी चावै कै म्हारै जवाई मे कित्ती क ऊरमा है अर जवाई मार खावण मे कित्तौ'क पक्को है। कदे-कदे तो जवाई माथ लाठी ठीगौ भी उठा लिया करै। अर लाता मुक्का री तो गिणती ही को करनी पण अं सगळा नेगचार पैलडी वार ई व्हिया करै। दूजी वार तो फूल री छड़ी ही को लगाव।'

रामनेमी खडतियै नै भळै समभायो क ' तू सासरै मे सुसरै अर साळा आग जरु वण्यो रईज। पीड व्है तो रोवण री मनाई कोनी, भाव धाप-धाप र कूकजे पण खडताराम सासरै में थारो

कुटाई ना'नी व्हेला जकी तनै मैं पैलाई समझाय दी है। तू ध्यान राखजे।"

रामनेमी री फाकी गिटावणी सीख सुण'र खडतियो बोलियो "मनै ठा है, थे इण बात सारू चिंता ई मत करो। मैं मार खावण मे घणो मेठौ हू। रावळियै खेता मे पैला जद कदेई म्हारो अेवड वडियो है तद म्हागे अंडी छिताई कई बिळियाहुयोडी है। सासरिया तो वापडा किस्तो'क बूटला, मिरचा रा ओधिया तो दावण सू रैया।"

रामनेमी बोलियौ "खडता, अेक बात ओ जू सुणलै कै तनै जद वै लडकावै तद तू इया भळै ई बोलतो रेइजे क थारी वेटीनै मेलद्यो थारी वेटीनै मेलद्यौ, मेलिया हीज सरसी, अब अठ में ताई कोनी छोड। म्हारै साथै मेलिया हीज सरसी।'

'अेक वाम तनै ओर करणो पडैला' रामनेमी कैयो आगलै गाव सू पाचे'क किलो मोतीचूर रा लाडू तनै भळै लेवणा पड ला जका तू थारै टाबरिय नै भुळा–चुपळा'र खुवावतो रइज, पण थारी लुगाईनैं तू पला मत बतळाइजे। उण सू तो तू थारै साथै वहीर करा'र लाया पछ हीज बोलजे।'

खडतियो रामनेमी कैया ज्यू–ज्यू हकारो भरतो रैयो। वी आगलै गाव र मोदी कनै मू लाडूडा तुला'र साथ ले लिया। इतर मैं वो गाव आयग्या जठै रामनेमी न खडतिय रो सासरो ठावो करणू है। रामनेमी सू कोई बात छानी कोनी ही वो खडतियेन एक अड घर सामी सीध करो जिणमे उण घर री बेटी आपरै सासरै सू आयोडी ही अर उण रे दो–अेक साल रा अेक टाबर हो। घर रा दूजा मिनख खेता मे गयोडा हा, पण बेटीनै आसूदगी सारू घरे छोडियोडी ही, जिकी घर रो ऊपर

सापग रा काम कर लेवै अर पीर मे च्यार दिन मोराई सू काट लेवै। घणो अबखो काम नी करणो पड।

जाट रो श्रो गुवाडो बडो जगो हो। अठ श्राया-गया पावणा री मरवरा सानरी हुया करतो।

रामनेमो दूर सू होज श्रागळी री सोध कर'र खडतिये न श्रो घर बतायो अर कैयो "उण घर मे जको बेटो भाणस ह वा तो थारी लुगाई है अर जको टाबर वठ रमै है वो थारो वेटो है। तू उणी घर मे जाय'र थारै ऊंत रो पलाण उतार दीजे।

खडतियैनै श्रैडी सोध कर'र रामनेमो श्राप तो म्हाथा-पाथा पग उठा'र श्रागलो गाव साकड करियो।

खडतियो श्रायो अर उण घर मे श्राप रो ऊठ जकायो अर पलाण उतार'र बारली तिरबारो मे जा, डेरा दिया। खडतियो गाभै-लत्त सू मागोपाग सजियो-बजियो हो। काना मे मुरकी-साकळ गलै मे च्यार श्रागळ चौडी गोप बाध्योडी अर डळो सा सोने री मूरत पण वै'र राखी ही। पग मे कडियो-ताती श्रोपता लगावता हा, बीटी—मूदडी पण जगासर श्रागळिया मे घात राखी ही।

मानखै श्राळो बटाऊ जाण'र इण घर श्राळी वेटी पाणी रो लोटो, चिलम अर तम्बाखू श्राळो गटी उण र कन मेल दियो। थोडी जेज पछै न्याई रोटी थाळी मे परस'र उणरै सामी जीमण सारू लाय राखी। नानडियो पण श्राप री मा रै साथै बटाऊ कन कई हेला श्रायो जिकै सू वो खडतिय रै सैंदो हुग्यो। खडतियो भी उणन लाडूडा दे-दे'र फेरु घणो सैंदो कर लियो। सदो हुया पछै तो टाबरियो श्राप सू श्राप बिरिया बिरिया हसतो मुळकतो

खडतियै नै आवतो–जावतो रयो ।

खडतियो कणा ही तो टाबरियै नै खोळ्या मे बैठावै अर कणा ही कधोळै माथै चढा–चढा'र हिंडा दिरावै । जाणै आपरै टाबर नै होज रमावता हुवै ।

आथण री पो'र घर आला सगळा ही खेता सू घरै आया । वा खडतियनै देख'र जाण्यो क कोई मारग वगतो बटाऊ है। गावा रा लोग पावणे-पही सू खासा हैत कर लिया करै जणा ही घर आळा खडतियैनै सीरो राखियो जिया आपर निजी प्रसगी न गाव । सिझ्या री वेळ पण सगळा सायै ही करो । रातनै सोवण सारू गाभे–लत्तै री भी जुगत पण सानळ ही करी । घर आळा खडतियन आप र कनै चौकी माथै सुवाण लियो । दिनुगै जद जीमा जूठी कर परा'र घर आळा खेत-पात जावण लागा जद वा खडतिय न वहीर हुवण रो कैयो । वा कयो "बटाऊ, रातवासौ लियो सको चोखो पण अब असदै बटाऊ रो अ कली लुगाई-पताई कन क काम ? अब तो बटाऊ नै रवानगी करणी ही चाहिजै ।"

पण खडतियै तो घर आळा री अैडी बाता काना ही नी ढोळी जद वानै साफ कैवणो पडयो क "बटाऊ! थारो आगलो मारग लेवो ।"

आ सुण'र खडतियो बोलियो ' मारग तो सायै मेल्या ले सू ।

घर आळा पूछियो "सायै भळे किणनं मेलण मारू कैवै है ?

खडतियो बोल्यो "थारी बेटी न और किण नै ।"

खडतिय री अैडो बाकल वात सुण'र घर आळो कैयो 'बटाऊ अकल ठिकाण कोयनो के ? जाण, नी पिछाण, भलो, नी-तलो तनै अैडो बेफेम री बात करता लाज को आवनी ?खडतियै कैयो 'इण

मे लाज रो कै बात है ' ब्याव हुया नै बरस च्यार हुवण लाग है। अब म्हारो बहून थार घरे खोरसो करणनै को छोड़ नी। अवै तो थान मेल्पिा सरसी।"

खडतियो तो आप री जाण मे साच ही बोल हो पण पराये पुरस री अंडी बात घर आलानै भला कद आछी लाग ? वा खडतियै रा पकड बूकिया'र गळगोते पर गळगोता दिया जिक सू उण री अकल ठिकाणै आ जावणी चाहिजे ही पण खडतियो तो इण तक जाण्या बैठो हो क 'सासरै मे अंडा नेगचार तो हुया हा कर।' उण कैयो 'थे म्हनै भलाई किनरा ही कूटो मैं पण थारा बेटीन वहीर करा'र लेय'र ही जासू ।

अवै तो घर आला रो धीरज जाबक टूट्यो हो, जद वा खडतियै नै सागीडो जरकावणो सुरु कियो। लात्ता रो लापसी अर धुत्ता रो घी घालणो चालु कियो। वा खडतियै मे अडी क्री जाण अवी डागरै न कूटता हुव।

खडतियो मार खा र साथै ही तो कूक-गरळावै अर साथ हो मेलदयो-मेलदयो कै'व।

खडतियो आपर आ लखणा सू इतरो घणो कूटीजियो क उण रै हाडा रो ना'नो चूरमा व्हैग्यो। पण उण किसी मानी ?

छेवट आस गावन भेळो हुणो पडियो अर दाय आव जिका ही इण जवाईन हरदुवारी अथवा गगारामो (लाठो) सू जुहारी दवै। खडतियै मायै कई लोगा हाथ उरळा करिया पण वो तो आप रै मन मैं पक्को हो।

रामनेमो खडतियैनै सागोपाग समझा'र पक्को कर दियो हो आखै दिन ओ गोधम रासो चालतो रयो। खेता मैं लावणो करण

री वेळा ही पण उपाय कं ? घर आळा रै अणहोई आफत गळ वधगी ही।

वा तो घणी ही खडतियैनै लरडैनै ठरडै ज्यू ठरडयो, भुवायो, टिप्पा दिया अर घणो ही जतरायो पण खडतियैं मेलदयो मेलदयो री लवा छोडी ही नी।

छेल स्याणा आदमिया घर आळा नै कैयो कै 'इया मत करो, नेटन आदमो रो काम है जे 'काई किसी हुगी तो आपा सगळा वध्या मराला । धीरज राखर कोई मारग काढो।"

गाव रै चौधरिया चोखळै रै पचा न भेळा करिया अर सगळी बात वा पचा र सामै राखी।

पचा भेळा हु'र खडतियैं री समसुत बात बठै ही ध्यान सू माड'र सुणी। घर आळा सू पण सारी बात दरियाफत करी। पछै पचा आपरै मन मे वई ज्यू करी।

पंचा घर आळा री बेटी रै सागी धणीनै बुलायो। अबै पचा न्याव-नपास करणो सुरु कियो। आखर मे पचा रो फैसलो हुयो।

पचा ऐलान कियो कै घर आळी बेटी रो टाबरियो जिकै री भोळिया मे जाय'र बठ जासी वो हीज उण टाबर रो बाप है अर जद पण उण रै साथै बेटी नै मेलणी पडसी।'

पचा गाव री गुवाड मे मिनखा री दो पात करी। एक पात मे खडतियै न बैठायो अर बीजी पात मे छोरी र पैली आळै धणी नैं बठायो अर टाबरियै नै दोनू पाता रै बिचाळै छोडियो।

टाबरियो खडतिय सू नू वो-नू वो सैदो हुयोडो हो क्यू कै उण छोरै न लाडूडा खुवाय-खुवाय अर लाड-प्यार सू रमाय—रमाय'र सैदो कर राख्यो हो। जद वो पाधरो खडतियै रो भोळि-

या मे जाय'र वठग्यो। अबै उपाय के ? मू डो तो पैला ही बळग्यो हो जद फू क परा काय सू देवै ?

घर आळा नै पचा रो फैसलो मानणो पड़ियो।

भला ही पचा रो ओ अन्याव करतो न्याव हो पण मिनख न कठै ही तो सबूरी करणी हो पड़ै ।

वाह रे रामनेमो, तेरा चम्मा चालचोडा कै ग्वडतियो बेट सुधी बहु ले पड़ियो । सायरा कैयो क झगडो मा-बाप है । खड तियै तो वा कर'र दिखाळी कै अक घडी रो धामा-धूटो सगळै दिन री सत्ता ।

फगडळ

फगडळ नै जे कोई फगडळ कै'वै तो वो जाणै मनै बावू कै'वै अर जे कोई बावू कै'वै तो वो जाणै मनै गाळ काढै। गाळ फगडळ र स्यावास अर स्यावास उणर फोट।

फगडळ रो सागी नाव तो हेतियो हो पण चौकर फगडळ नाव सू हेतियो आख सहर मे नामी हुयो।

फगडळ वे'र मोहर सू फोरो को होनी, केई करता वो ओपतो अर मूल हो। वे'र री ओपताई रै कारण होज केई जणा फगडळ री सगाई करण मारू उणर घर रा चक्कर काटता क्यू-क इणरा माइत वदेई आपरै नाव सू ओळखीज ता हा, पण सगाई करण री इच्छा सू आवणिया नै जद ओ ठा लागतो कै "कवरजी रा दसकत डागळै सूकै' जणा सगाई करणिया सागी पगा पाछा होज वहीर हुय जावता।

एकर सगाई करणिया मे सू कोईसै फगडळ नै पूछलियो कै "कवरजी थारै घर मे परण्योडो कुण ?"

फगडळ उथळो देवतो बोल्यो– "परण्योडा तो खाली म्हारा बापू है, बीजो म्हे तो अजे कु वारा होज रै सा।

फगडळ री गैलसफो वात सुण'र आवणिया मनोमन उथळो करयो कै "बापू ज परण्योडा नो हुवता तो था जिसा निघ कु कर जलमता।"

वा एक दूसरै कानी देख्यो अर सनासेन मे बात करी क आ तिला मे तेल कोयनी, टाबर कोई चीजो ही भाळणो पड़सी।'

फगडळ कार मजूरी खातर एक कमठाण पर काम लाग्या। पण भागा री बाज के फगडळ अडाण माथै सू हेठै जा पडचो। पडणै सू फगडळ रो डील सगळो खळकीजग्या। (पग र) लागी। लोही आयग्यो। पीड तो पच्छै हुवणी होज।

कमठाण रो ठेकादार दूजा करतो कई भलो मिनख हो। उण नै फगडळ माथै दया आई। उण फगडळ नै पूछयो "अरै, फगडळ तू तो पडग्यो।"

फगडळ पाछो बोल्यो– पडग्यो तो काई – पण'

ठेकादार कैयो "अरै थारै तो लोही आयग्यो ?'

फगडळ बोल्यो "लोही तो काई आयग्या पण – '

ठेकादार दया रै सुर मे बोल्यो अरै थार तो पीड हुयगी दीसै।'

फगडळ पाछो कयो 'पीड तो काई हुयगी पण '

ठेकादार–' अरै अस्पताळ ले चाला काई ?

फगडळ–"इसपताळ तो के ले चालो पण

ठेकादार कई उत्तावळो हुयर"अरै आ पण भल काई हुई ?'

फगडळ कयो "आ पण तो काई हुई पण '

ठेकादार कई धीरज बधावतो बोल्यो 'अर है जिकी बात तो बता।

फगडळ पण उणी भाँत बोलते कैयो "है जिसी बात तो काई कयू पण – '

ठेकादार कई गरमास परगट करत कैयो "कई तो कैयसीक'

नरा फगडळ उणी भात बोलतै कैयो– कईतो काई कै'सू परा'

अवै तो ठेकादार घ्यावस नाखतै कयो-अर, परा ही पण, पण आ परा है के बलाय ?'

अब तो फगडळ चुडावण रा-सा दात काढतो बोल्यो- "म्हारली माऊ (मा) कै'सी कै पडग्यो पण नू क्यू पडग्यो ?"

फगडळ नौकरी री पडताळ मे नीसरयो–रस्तै मे एक भायलो मिल्यो। भायलो खाली नाव रो ही ज हो, बाकी तो फगडळ री गैल सफी वाता माथ उणनै घणो मजो ग्रावतो हो।

भायलो फगडळन खाथा खाथा पग मेलता देख'र कैयो 'फगडळ ग्राज सिधसाग चाल्यो ?"

फगडळ कैयो–' नौकरी बीजो जोवलन',

भायलै पूछ्यो—"नौकरी कायरी ग्रर कठै करसी ?'

फगडळ उथळो करतो बोल्यो ' जिसी मिलसी ग्रर हुयसी उठै ही कर लेसा रे।'

भायलो–"तनै उण जागा रो ठाव है क्या ?'

फगडळ–' मनै तो को ठा न को ठेगो।'

भायलो "हू बतावो था जागा ?'

फगडळ– बतावोनी भाईजी, भळै चाहिजै ही के!'

भायलै कयो ' ग्रेऽऽ तू फलाणै दफ्तर मे मुकडै बापू कनै जा रो'र म्हारो नावले लीये, बाबू तन साव सू मिलाय देसी,' भायलो ग्रागै ताकड देवतो बोल्यो–'हा तो जा वेगो, पग उठा'र' भायलो तो इतरो कंय'र ग्यारतिया तेतीस हुयग्यो।'

फगडळ लाम्बी डिग मेलता जा बडघो उण फलाणे दफ्तर

र मुकड बाबू कनै। फगडळ बाबू री कुरसी रै लार नेडो सरक'र ऊभग्या।

बाबू फाइल सू जद आप री नाड ऊची करी तो गळी आळो फगडळ ऊभो है। बाबू फगडळ नै ऊभो देख'र पूछ्यो– 'अर किया फगडळ, आव।'

फगडळ –'आयानी भाइजी।'

बाबू–'बोल किया आयो ?'

फगडळ कैयो– 'पगा-पगा आयो भाईजी, और किया आवतो? हुवाई ज्याझ चढ'र तो पकायत ही को आयोनो।

बाबू–'पगा पगा आयो जिको तो सावळ करयो पण अ दरसण कू कर देय नाख्या आज ?'

फगडळ–'दरसण तो देय नारया जिका देय हीज नारया।'

बाबू कैयो–'अरे काम के आयो है जिकी बात बतावैन।'

फगडळ बोल्यो – 'नौकरी वेई आयो हूं लगा देवोनी'

बाबू पूछ्यो–'काई नौकरी करसो ?'

फगडळ– थे कसो जिकी हीज कर लेसू।'

बाबू–'तो सा'ब सू मिलाय दू ?'

फगडळ–'मळै के चाहिजै, मिलाय देवोनी'

बाबू फगडळनै आपरे साथै लेयर सा'ब रै कमरै मे चिव कडवै कर'र गयो अर सा'व सू जैरामजीरी कर परी'र फगडळ सारु नोकरी री अरजकरी कै 'इणनै रोटचासर करो।'

सा'ब सगळी बातनै जाण'र बाबूनै तो पाछा मेल दियो अर फगडळ नै इ टरव्यू सारु राख लियो।

इ टरव्यू लैव'त सा'ब फगडळ नै पूछ्यो– 'नौकरी करना

चा'ते हो ?'

फगडळ–'हकारो भरतै कैयो हमेसा ।'

सा'ब–'पहले कहीं सर्विस की है ?'

फगडळ—'हा, सा करी है ।'

सा'ब –'कुछ पास हो ?'

फगडळ पास रो अथ कनै जाण'र सा'बरै नेडो सरकतै कयो 'हा सा'

सा'ब-'सर्टिफिकेट है ?'

फगडळ कैयो –'हा सा, है ।'

सा'ब पूछयो-'सर्विस कहा कहा करी है ?'

फगडळ उथलो करतै कैयो–'वाली बाल मे सा ।'

सा'ब जाणकारी करतै पूछयो– वाली वाल मे ?'

फगडळ हा सा, मे वालीवाल मे सर्विस हीज करया करतो ।'

सा'ब हसतै सी पूछयो 'भैया, तब पास क्या हो ?

फगडळ आपरी राफा खेलसी करतै कैयो–'सा पास कदे कदे मै हीज दिया करतो ।'

सा'ब–'फिर सार्टिफिकेट काहे का है ?'

फगडळ–'सा एक तो सेविंग सर्टिफिकट है अर बीजो अडाण मायँ सू पडग्यो हो जणा मेडिकल सार्टिफिकेट लियो हो । '

सा'ब हसी अर अचभै मे भरीजतो बोल्यो 'फिर नौकरी कसे करोगे ।'

फगडळ बोल्यो-'नौकरी अ गा करसू सा ।'

सा'ब फगडळ रो डोल माजनू जाणग्यो हो कै ओ इण डोल रो है जद था कैयो–'बस,हो गई तुम्हारी तरफ सू नौकरी ?'

फगडळ आप री भत्तो भूवा रै सासरा सू फू फाजी फकीरचद जी रै फोत पाया पच्छै मिलण सजा'र पाछा आवती विरिया बालाजी री ठेसण सू टिगट कटा'र गाडी मे चढ्या । डब्ब म छीड ही । सो'ही डब्बो खाली सो पडियो तो ही पण फगडळ आप री जूत्या खोल'र काधै उपरलै धोतिये नै डब्बै री फरस माथ बिछा'र हेठै बैठग्यो । दूजा मुसाफर आप री मोय मे बैठा हा व पण उण नै क्यू कैवता हा कै आप हेठै नी बैठ'र सीट माथै बिरा जो सा । मुसाफर आपस मे बाता करता हा ।

एक छोरलो, हुवलो-सो मोटियार पण वा मुसाफिरा भेळा बैठो हो, उण एक बूढै आदमीनै कैयो -"मैं कवि हू, आप क'वो ता आपनै कविता सुणाऊ ?"

डैण बोल्यो- 'भाई, तेर जे कविता सुणावण सारू समीड उप डग्यो है तो सुणायरो, क्यू उधार राख है ।"

छोरै कविता बोलणी सुरु करी-

"कोरी कोरी आख काढै भाटो वा'भो के ?

तेरो बाप चौधरी मनै मार लेसी के"

डैण छोरै नैं बीच मे ही टोकते कयो— "भाया तू कितरै वरसा रो है ?"

छोरै उत्तर दियो-"मैं तो कोई तीसेक साल रो हू ।"

डैण-"आ कविता मैं म्हारो समझ पकड्या सू लगा'र आज ताई सुणता आयो हू, कविता केठाक तेरी ही बणायोडी हुवला ।"

डैण री बात सुण'र - कवि बण्योडो छोरो ढाई भू णिया री ढील सू कि नो कट ज्यू कटग्यो । वो तो भळै बोल्यो न को चाल्यो बोलो-बोलो आपरो मू डो फोर'र बैठयो रयो ।

पण फगडळ रै आतरै वैठयै रे मचमचो मी चालगी। वा डैण कन आय र बोल्यो-"तो मै सुणाऊ आपन कविता, पला रो सुण्योडी हुवै तो बता देया।

डण कयो- तू ही थारी सुणा परी क्यू बाकी रासै। पैला रो सुण्याडी हुयसी तो तने पण कंय देमा।"

फगडळ जच'र कविता सुणावण लागो-

"इकतारो खडताळ लीनो, भजन गासी के
भजन रै परताप सेती सुरगा जासी के
बडा सारो बोटो वाध्यो, गाव जासी के
गोजियै सू सोट काढ, टिगस कटासी क
दस पाच रिपिया माग्या, नाक्रा पासी के
देऊ ला तो पाछो देवण, काको आसी के

फगडळ कविता सुणा'र डण कानी आपर कोइया रो सळा खाच'र पूछयो क-"बतावो, आ सुणी हो के कदेई ?"

डैण बाल्यो-कूडी नी कुवाव राम, आ तो आज ही सुणी है।

फगडळ फेर बोल्यो- "भर आ, जिको मैं आपन सुणाऊला।'

डैण कैयो-' कैया जाणीजैं।"

फगडळ भळै आपरी कविता सुणावणनै लाग्यो जच'र। आ कविता भाव मत हुवो पण तुकबदी तो जोसोरो करण आळी ही। मन बिलमावण आली कविता नै सै'हो सुणनो चावै। फगडळ री कविता आख डव्ज र बदा सुणी। कविता इया ही-

खावणो चाहिजै बोरियो हुवो भला ही आलो ही
चूसणी चाहिज आइसक्रोम पडो चायै पाळो ही
बैठणो चाहिज छाया माय, हुवो चाये ढाळो ही

मूतणो चायै छात माथ, पडो चायै नाळो ही
डुक पैमलो मार देणो, हुवो चायै साळो ही
करणो चाय ग्राखर फिचर घर मे हुवो घाळो ही
फगडळ ग्रा सुणा'र डैण न पूछयो ही– 'ग्रा कदेई सुणी के ?'
डण हसतो सो बोल्यो - 'ग्रा तो ग्राज हो थारै मू 'ड सू सुणी है ?"

फगडळ बोल्यो– 'लो, ग्रा ग्रौर सुणो ग्रर जे पै'ला कदेई सुणी हुवै तो बताय देया ।"

डैण बोल्यो--- "तू जवरो भी, थारो कैयोडी स्यात ही कद सुणी हुवै ।

फगडळ भळै सुणावणो सुरु करी -
खाणो चाये ग्रालो चीज, हुवो भला ही गोबर ही
पजाय देणी ग्रागलोन हवो चायै भोभर ही
खाणो चाय जै'र विप हुवो चाय जाभर ही
मार देणो जबर डुक हुवो नाराज सौ बर ही
फगडळ री कविता सुण'र डैण पल डै कवि नै कैयो

मोटयार, कविता नाव इणरो है । ग्रा खुद री बणायोडी कविता है थारल दाई चारो बरघोडी कोनी ।"

सपादक री पूछडी

स्ळै मोद में थोबडो होबडो सो सुजाया राजस्थानी भापा री कूडो माघ पिडत वण्यो, भूण सो भोड ऊचो करया कुजडै री पावली साढ-सा होट छिटकाया ऊधं खुरडा मे उतरयोडा खू सडा पैरया एक जावक सू गलो-सो आदमी सडक रो भो विगाडतो-सी जावै हो।

उणन देख'र एक जणं मन कयो- "ओ है वा सपादक, जिको आप री मूरखता रै माफडदानै मे राजस्थानी भापा न सिणगार री भोळप मे ऊनी घाघरियो पैरा'र सासण नाच नचावण री गईआळी चेप्टा करै।

उण गईयाल मिनखन देखता ही मन छीकणी-सी आवणन लागगी, तोही पण मैं उणन हाथ रा झालो देय'र हैलो पाडयो कै 'भाईजी थोडा पग ढाव्या।

म्हारै हेन माथै वो ढबतो गयो पण आपरै चै'रै री सळ सारतो बोल्यो- "कहिये कहिये पीछे से आवाज क्यू लगाई ?"

सपादक री बोली रा अँ वाजा सुण'र म्हारै सू नी रयीज्यो जणा म बोल्यो "सपादकजी, मै तो खाली हेलो ही मारयो है, लोग देसी लारै सू बाग।"

सपादक आप र नाक माथै सू चस्मै री डाडी ऊतारतो बोल्यो "बाग क्या होती है ?"

मैं कयो -"बाग होती है जगोताळो सिर !"

वो बोल्यो— 'क्या मतलब ?'

मैं पाछो कयो 'मतलब चटक सो समझ मे को आवनी।'

में उणरै भाषा ज्ञान माथ अचभो करयो अर बोल्यो-'त्याई'

वो बापडो त्याई' रा मतलब कद समझतो हा, वो बोलै तो कै बोल ! आखर मैं ही उणनै चला'र पूछ्यो—'आप निकाळो हो राजस्थानी भाषा मे छापो ?

वो म्हारी इण बूझना माथै राडरा सा दात काढतो वोल्यो- 'जी जी जी !"

मैं पूछ्यो — 'नीमरग्यो परो

वा बोल्यो—'अभी नहीं, अभी नही अभी देर हैं।'

में कयो—' काधिया तो आयग्या हुवला ?

उण कैयो--"जी नही, वो तो नौकरी छोडकर चला गया।

म भळै उणरै राजस्थानी भाषा ज्ञान माथ म्हार पटपड म ली अर म मनमन मे सोच्यो क 'आछी बिध लागी है फटग्या पाव घाट पसेगी सू 'वो मन पटपटी मे खाता देख'र सैतरो वतरो हुयग्यो अर सू दै साड ज्यू म्हार कन नाड नारया ऊभा रैयो।

म भळै उणन चला र पूछ्यो 'आपन राजस्थानी सरासरी सी आव दोसै ?"

म्हारी इण वात माथै वो आपरो सगलो शरीर काद म हुयोडी कुतडी दाई फडफडावै ज्यू फडफडा र बोल्यो -"वासा वा सरासरी क्यू नी आती ! हमरो जलम तो अठैको ही है, सिर्फ हमारी नानी को जलम आसाम को है। जिसै क्या हुवो।"

म उणरी अैडी वरी वाता सुण र मन मे सोच्यो कै—'तेरै

सू यात करणे मे हो तसियो है । टाळ, टालोकडजो देव ।

अब आप ही विचारो क अं ठै सपादक सू राजस्थानी भाषा आपरी एक रुपतारै ढाल मे ढलै तो बू कर टलै । अनाडी वेदरै हाथा मे पडयाडो रोगो ठोक हुवतो इसै सपादका सू राजस्थानी भाषा रा भलो हुवै । ज किणोनै सार्वदेशिक राजस्थानी भाषा रो ज्ञान नहीं है तो उणनै आपरी क्षेत्रिय बोली मे हीज लिखणो चाहिज ।

राजस्थानी रा अं डा केई लेखक है जिका अंपरी मे ढूढाडो मे का हाडौती मे लिखै उणनै कुण दास देवै । अ ड लेखण सू ओ फायदो जरुर हुव कै बोजे क्षत्र रा लेखक उठै रै सबदा सू प्रयोगा सू सैदा हुव । पण भाषा नै कचावणी आछो वात कोयनी ।

अवै तो खैर, ओ सवाल को रैयोनी क किणी एक रै कचोया भाषा खराब हुव अर एकरै लिख मुजब नै हो सब भाषा मानै क्यू क अवै राजस्थानी मे लेखका री कमी नी है चारू वला सू हीज राजस्थानी मे लिखीज रया है अर पोथ्या पण छाप रैयो है शिक्षा विभाग पण राजस्थानी री पोथी सालू साल छाप अर केई विश्व-विद्यालय मे पण राजस्थानी री भणाई चालू हुयगी है ।